हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

RNI NO - CTHIN/25/A0716

मूक पत्रिका

निष्पक्ष, निर्भीक, स्वतंत्र आवाज...

वर्ष - 03 अंक - 85 बेमेतरा, शुक्रवार 13 नवम्बर 2026 रायपुर एवं बेमेतरा से प्रकाशित कुल पेज - 08 मूल्य - 1 रूपये डाक पंजीयन- दुर्ग/1743290201/2025-27

संक्षिप्त समाचार

वैदिक मंत्रोच्चार के साथ शीतकाल के लिए बंद हुए केदार नाथ धाम के कपाट

केदारनाथ। पूरे विधि-विधान और वैदिक मंत्रोच्चार के बीच विश्व प्रसिद्ध ग्यारहवें ज्योतिर्लिंग भगवान केदारनाथ धाम के कपाट शीतकाल के लिए विधिवत बंद कर दिए गए। कपाट बंद होने के इस पावन और ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बनने के लिए देश-विदेश से हजारों श्रद्धालु कड़ाके की ठंड के बावजूद केदारपुरी पहुंचे हुए थे। कपाट बंद होने के तुरंत बाद सेना के बैंड की भक्तिमय धुनों और 'जय बाबा केदार' के गगनभेदी जयकारों के बीच बाबा केदार की पंचमुखी चल विग्रह उत्सव डोली अपने शीतकालीन प्रवास ओंकारेश्वर मंदिर, उखीमठ के लिए रवाना हो गई। अब आगामी छह महीनों तक भक्त उखीमठ में ही बाबा केदार के दर्शन और पूजा-अर्चना कर सकेंगे। केदारनाथ धाम के मुख्य पुजारी गंगाधर लिंग महाराज ने बताया कि कपाट बंद करने की धार्मिक प्रक्रिया बुधवार तड़के ब्रह्म मुहूर्त से ही शुरू कर दी गई थी। सुबह सबसे पहले स्वयंभू शिवलिंग का भव्य महाअभिषेक किया गया, जिसके बाद विशेष पूजा-अर्चना संपन्न हुई और प्रभु को भोग अर्पित किया गया। इसके उपरांत परंपरा के अनुसार भगवान शिव को समाधि रूप देते हुए भस्म, पुष्प और सूखे पत्तों से ढक दिया गया।

चलती ट्रेन से उतरते वक्त पायदान में फंसा महिला का पैर, 30 मीटर तक घिसटी

किशनगढ़ । राजस्थान के किशनगढ़ रेलवे स्टेशन पर सुबह उस समय बड़ा हादसा होते-होते टल गया, जब चलती ट्रेन से उतरने के प्रयास में एक महिला का पैर कोच के पायदान और प्लेटफॉर्म के बीच फंस गया। ट्रेन रफ्तार पकड़ने लगी और बेबस महिला करीब 30 मीटर तक पटरी और प्लेटफॉर्म के बीच घिसटती चली गई। इसी दौरान प्लेटफॉर्म पर मुस्तैद आरपीएफ के एक सतर्क जवान की नजर महिला पर पड़ गई। जवान ने तुरंत सूझबूझ दिखाते हुए गार्ड को आपातकालीन लाल झंडी/इशारा कर ट्रेन रुकवाई और दौड़कर यात्रियों की मदद से महिला को सुरक्षित बाहर निकाल लिया। इस रोंगटे खड़े कर देने वाली घटना का पूरा सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है।

किसानों को बड़ी राहत

कम धान उपजने पर भी 21 क्विंटल प्रति एकड़ का मिलेगा लाभ

रायपुर/ संवाददाता

छत्तीसगढ़ में खरीफ विपणन वर्ष 2026-27 की धान खरीदी के बीच किसानों के लिए बड़ी राहत की खबर सामने आई है। प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व वाली राज्य सरकार धान खरीदी की व्यवस्था में ऐसा बदलाव करने की तैयारी में है, जिससे कम उत्पादन होने पर भी किसानों को आर्थिक नुकसान न उठाना पड़े। सरकार प्रति एकड़ 21 क्विंटल की निर्धारित सीमा के अनुसार किसानों को पूरी आर्थिक सहायता देने की व्यवस्था कर सकती है। इस संबंध में 15 नवंबर को धरमजयगढ़ में होने वाले कार्यक्रम में बड़ी घोषणा की संभावना जताई जा रही है। हालांकि, इस व्यवस्था की अंतिम शर्तों और भुगतान के तरीके को लेकर सरकार की आधिकारिक घोषणा का इंतजार है। प्रदेश के कई इलाकों में मौसम की अनिश्चितता, सिंचाई की सीमित सुविधा और अन्य कारणों से किसानों को प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान का उत्पादन नहीं मिल पाता। ऐसे में निर्धारित खरीदी सीमा तक धान बेचने के लिए कुछ किसान अतिरिक्त धान की व्यवस्था करने को मजबूर हो जाते थे। इससे बिचौलियों को भी फायदा पहुंचता था। नई व्यवस्था लागू होने पर किसानों को अपनी वास्तविक उपज के अनुसार धान बेचने की सुविधा मिलेगी और निर्धारित सीमा के शेष हिस्से पर भी आर्थिक सहायता मिलने का रास्ता खुल सकता है। धान खरीदी में फर्जी रकबे, दूसरे राज्यों से धान लाकर बेचने और उपार्जित धान की दोबारा बिक्री जैसी



शिकायतें लंबे समय से सामने आती रही हैं। सरकार ने इस पर नियंत्रण के लिए पंजीयन, रकबा सत्यापन और खरीदी केंद्रों की निगरानी को सख्त किया है। सरकार की मंशा है कि खरीदी केंद्रों तक केवल वास्तविक किसानों की उपज पहुंचे। यदि कम उत्पादन वाले किसानों को भी निर्धारित सीमा के अनुरूप आर्थिक सहायता मिलती है, तो अतिरिक्त धान जुटाने के लिए बिचौलियों पर उनकी निर्भरता घटेगी। पिछले कुछ वर्षों में प्रदेश में धान खरीदी का आंकड़ा लगातार बढ़ा है। खरीफ विपणन वर्ष 2023-24 में 144.92 लाख मीट्रिक टन और 2024-25 में करीब 149 लाख मीट्रिक टन धान का उपार्जन हुआ था। वहीं, वर्ष 2025-26 में खरीदी घटकर लगभग 141 लाख मीट्रिक टन रह गई। नई व्यवस्था और सख्त निगरानी के चलते चालू सीजन में वास्तविक धान खरीदी करीब 125 लाख मीट्रिक टन रहने का अनुमान लगाया जा रहा है। राज्य मंत्रिपरिषद ने खरीफ-2026 के लिए कृषक उन्नति योजना में संशोधन को मंजूरी दी है। इसके तहत धान पर मिलने वाली आदान सहायता राशि की व्यवस्था को प्रति क्विंटल के बजाय प्रति एकड़ के आधार पर पुनर्गठित किया गया है। इस बदलाव का उद्देश्य किसानों को उनकी जमीन और खेती की परिस्थितियों के अनुरूप आर्थिक सहायता देना है।

धान के समर्थन मूल्य में की 72 रुपये की बढ़ोतरी

केंद्र सरकार ने खरीफसीजन 2026-27 के लिए सामान्य धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2,441 रुपये प्रति क्विंटल और ग्रेड-ए धान का एमएसपी 2,461 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया है। पिछले वर्ष की तुलना में इसमें 72 रुपये प्रति क्विंटल की वृद्धि की गई है। छत्तीसगढ़ सरकार कृषक उन्नति योजना के तहत आदान सहायता जोड़कर किसानों को धान के लिए कुल 3,100 रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से भुगतान सुनिश्चित करने की व्यवस्था कर रही है। धान खरीदी प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए इस बार डिजिटल व्यवस्था पर विशेष जोर दिया गया है। एग्रीस्टेक आईडी से जुड़े पिछले वर्ष के पंजीकृत किसानों का पंजीयन मान्य किए जाने से उन्हें दोबारा पंजीयन की प्रक्रिया से राहत मिलेगी। डिजिटल क्रॉप सर्वे के जरिए धान के वास्तविक रकबे का सत्यापन किया जा रहा है।

बीजेपी मुख्यालय में दिवाली मिलन समारोह

पीएम मोदी बोले-2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य नामुमकिन नहीं है.....

नई दिल्ली/एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को नई दिल्ली स्थित बीजेपी मुख्यालय में आयोजित दिवाली मिलन समारोह में पत्रकारों को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने मीडिया के बदलते स्वरूप, अपने राजनीतिक सफर और केंद्र सरकार के 25 वर्षों के अनुभवों को साझा किया। साथ ही पीएम मोदी ने 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य को लेकर भरोसा जताया। उन्होंने कहा कि भारत जिस गति से आगे बढ़ रहा है, उसे देखते हुए विकसित भारत का सपना पूरा करना नामुमकिन नहीं



है। पीएम मोदी ने 90 के दशक की शुरुआत का जिक्र करते हुए कहा कि उस समय उन्हें देशभर में दो बड़ी यात्राओं की व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी मिली थी। उन्होंने बताया कि उस दौर में प्रेस रिलीज भेजने के लिए भी फैक्स मशीन ढूंढनी पड़ती थी। उन्होंने अपने गुजरात का मुख्यमंत्री बनने से जुड़ा एक दिलचस्प किस्सा भी साझा किया। पीएम ने बताया कि एक दिन दिल्ली स्थित 11 अशोक रोड के उनके कमरे में पत्रकारों का समूह पहुंचा और मिठाई खिलाने की मांग की। पत्रकारों ने उन्हें बताया कि वह गुजरात के मुख्यमंत्री बनने जा रहे हैं। बाद में यह खबर सही साबित हुई। प्रधानमंत्री ने कहा कि सरकार के प्रमुख के रूप में उनके 25 साल पूरे हो चुके हैं। इस दौरान देश, दुनिया और राजनीति करने का तरीका काफी बदल गया है। टेक्नोलॉजी के विकास ने मीडिया का स्वरूप भी पूरी तरह बदल दिया है।

सोनिया गांधी के बयान पर भड़के अनिल विज, कहा- इटली के संविधान में विदेशी प्रधानमंत्री नहीं बन सकते

चंडीगढ़। हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री अनिल विज ने आज कांग्रेस नेता सोनिया गांधी पर प्रहार करते हुए कहा कि सोनिया गांधी बिल्कुल गलत कह रही है क्योंकि हम अपने देश में दूसरे देश के नागरिकों को वही अधिकार देते हैं जो हमारे नागरिकों को उनके देश में अधिकार दिए जाते हैं। उन्होंने कहा कि इटली में उनके संविधान के सेक्शन 84 के तहत कोई भी गैर प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति नहीं बन सकता है। इसी प्रकार, हम भी सोनिया गांधी को प्रधानमंत्री नहीं बना सकते थे जबकि वह प्रधानमंत्री बनने के लिए तत्पर थी और इस कारण से उनको नहीं बनाया गया।

सियासी गलियारों में हलचल मचा दी

वह कुशल वक्ता,मेहनती इंसान हैं पित्रोदा ने पीएम मोदी की तारीफ

नई दिल्ली/एजेंसी

इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जमकर सराहना करते हुए राजनीतिक गलियारों में हलचल मचा दी है. सैम पित्रोदा ने पीएम नरेंद्र मोदी को एक अच्छा वक्ता करार दिया है. पित्रोदा ने पीएम मोदी को एक बेहतरीन वक्ता होने के साथ-साथ अत्यंत मिलनसार, दयालु, स्नेही और दूसरों की परवाह करने वाला व्यक्ति करार दिया है. इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के प्रमुख सैम पित्रोदा ने पीएम नरेंद्र मोदी की तारीफ कर



सबको सकते में डाल दिया है. उनका यह बयान लोगों को चौंका दिया है. इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 'कुशल वक्ता' और 'मेहनती इंसान' बताया है. पित्रोदा ने कहा कि हमारे बीच कोई व्यक्तिगत मतभेद नहीं हैं. एक गुजराती नेता, मित्र और शुभचिंतक के रूप में, मुझे पीएम मोदी से कोई शिकायत नहीं है. बता दें कि सैम पित्रोदा का यह चौंकाने वाला बयान उस सवाल के जवाब में आई, जिसमें कांग्रेस संसदीय दलकी अध्यक्ष सोनिया गांधी द्वारा कभी प्रधानमंत्री मोदी को एक बड़ा वक्ता बताए जाने का जिक्र था. दरअसल, राहुल गांधी के अमेरिकी दौरे को लेकर बीजेपी ने कांग्रेस पर निशाना साधा था.राहुल गांधी के खिलाफ भाजपा के 'विदेशी हस्तक्षेप' के दावों को पित्रोदा ने 'घिसा-पिटा राजनीतिक हौवा करार दिया था.

चार दिन चलेगी सदन की कार्यवाही

14 दिसंबर से शुरू होगा विधानसभा का 17वां सत्र

रायपुर। छत्तीसगढ़ की छठवीं विधानसभा के 17वें सत्र की तारीखों का ऐलान हो गया है। विधानसभा सचिवालय की ओर से जारी आदेश के अनुसार, विधानसभा का आगामी सत्र 14 दिसंबर 2026, सोमवार से शुरू होकर 17 दिसंबर 2026, गुरुवार तक चलेगा। इस दौरान सदन की कुल चार बैठकें आयोजित की जाएंगी। विधानसभा सचिवालय के मुताबिक, चार दिवसीय इस सत्र में वित्तीय कार्यों के साथ अन्य शासकीय कार्य भी संपादित किए जाएंगे। इस दौरान सरकार के वित्तीय कामकाज और विभिन्न विभागों से जुड़े महत्वपूर्ण विषय



सदन के सामने रखे जाएंगे। विधानसभा सत्र के दौरान सत्ता पक्ष जहां सरकार की योजनाओं, उपलब्धियों और विभागीय कामकाज से जुड़े विषयों को सदन में रखेगा, वहीं विपक्ष को भी सरकार से सवाल पूछने और विभिन्न मुद्दों पर जवाब मांगने का अवसर मिलेगा।

कन्नौज में भीषण सड़क हादसा- अज्ञात वाहन की टक्कर से तीन युवकों की मौत, एक घायल

कन्नौज। उत्तर प्रदेश के कन्नौज जिले में एक दर्दनाक सड़क हादसे में तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि एक अन्य युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। यह हादसा इंदरगढ़ थाना क्षेत्र के कचाटीपुर गांव के पास हुआ। बताया जा रहा है कि चारों लोग एक ही बाइक पर सवार होकर कहीं जा रहे थे। इसी दौरान एक अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि बाइक सवार तीन युवकों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया, जबकि चौथा युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। बाइक जब कचाटीपुर के पास से गुजर रही थी, तभी अचानक एक अज्ञात वाहन ने जोरदार टक्कर मार दी।

अनिश्चितकालीन हड़ताल के बीच प्रशासन ने सख्त रुख अपनाया

पटवारियों की हड़ताल के बीच प्रशासन का बड़ा एक्शन,तीन निलंबित और 57 का वेतन रोका...

रायपुर/ संवाददाता

खैरागढ़-छुईखदान-गंडई जिले में पटवारियों की अनिश्चितकालीन हड़ताल के बीच प्रशासन ने सख्त रुख अपनाया है। राजस्व कार्यों में लापरवाही, वरिष्ठ अधिकारियों के आदेशों की अवहेलना और निर्धारित समय-सीमा में काम पूरा नहीं करने के मामलों में तीन पटवारियों को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। वहीं, हड़ताल में शामिल जिले के 57 पटवारियों का अक्टूबर माह का वेतन आहरण नहीं किया गया है। दूसरी ओर, गंडई, छुईखदान और साल्हेवारा तहसीलों के हड़ताली पटवारियों को जारी अंतिम कारण बताओ नोटिस में स्पष्ट चेतावनी दी गई है कि शासकीय कार्यों से विरत रहने और आदेशों की अवहेलना जारी रहने पर नियमानुसार अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी। गंभीर मामलों में निर्धारित प्रक्रिया के तहत सेवा से पृथक करने तक की कार्रवाई हो सकती है। प्रशासन के मुताबिक, संबंधित पटवारी 13 अक्टूबर 2026 से अनिश्चितकालीन हड़ताल पर हैं। इसके चलते डिजिटल क्रॉप सर्वे, गिरदावरी, फार्मर रजिस्ट्री, स्वामित्व योजना, नामांतरण, बंटवारा और सीमांकन जैसे महत्वपूर्ण राजस्व कार्य प्रभावित हो रहे हैं। खासकर आगामी धान खरीदी को देखते हुए फसल संबंधी अभिलेखों का सत्यापन और डिजिटल क्रॉप सर्वे का अनुमोदन समय पर पूरा होना जरूरी है। प्रशासन का कहना है कि काम लंबित रहने से किसानों और आम नागरिकों को परेशानी उठानी पड़ रही है। हड़ताली पटवारियों को 30 अक्टूबर को जारी अंतिम नोटिस में पहले दिए गए 16 अक्टूबर के निर्देशों का हवाला देते हुए 2 नवंबर को सुबह 10 बजे तक निर्धारित कार्यस्थल पर उपस्थित होकर काम संभालने का निर्देश दिया गया था। साथ ही संबंधित तहसीलदार को सूचना देकर लंबित कार्यों का तत्काल निराकरण करने को कहा गया था। निर्धारित समय पर काम पर नहीं लौटने की स्थिति में अनुपस्थिति को नियमानुसार अनधिकृत मानते हुए अनुशासनात्मक कार्रवाई का प्रकरण सक्षम प्राधिकारी को भेजने की चेतावनी दी गई थी। नोटिस में 'काम नहीं तो वेतन नहीं' के सिद्धांत पर कार्रवाई का भी उल्लेख है। इधर, तीन पटवारियों पर हुई निलंबन की कार्रवाई में खैरागढ़ तहसील के हल्का नंबर 35 और

महादेव ऐप केस

सट्टा किंग भेजा गया जेल-सौरभ चंद्राकर को दिल्ली से लाकर कोर्ट में किया गया पेश, अब 19 नवंबर तक जेल में रहेगा.....

रायपुर। संवाददाता

महादेव ऑनलाइन सट्टा ऐप मामले में बड़ी खबर सामने आई है। इस मामले के प्रमुख आरोपी सौरभ चंद्राकर को रायपुर की विशेष अदालत में पेश किया गया, जहां कोर्ट ने उसे 19 नवंबर तक न्यायिक रिमांड पर भेजने का आदेश दिया है। कोर्ट के आदेश के बाद सौरभ चंद्राकर को कड़ी सुरक्षा के बीच सेंट्रल जेल भेज दिया गया। वहीं, पूछताछ के लिए श्वष्ठ की ओर से मांगी गई रिमांड को अदालत ने मंजूरी नहीं दी। मिली जानकारी के मुताबिक, सौरभ चंद्राकर को सीबीआई की टीम अपने कार्यालय से लेकर रायपुर की विशेष अदालत पहुंची थी। इससे पहले सीबीआई ने अदालत से मिली 8 दिनों की रिमांड पर उससे पूछताछ की थी। रिमांड की अवधि पूरी होने के बाद आज उसे दोबारा कोर्ट में पेश किया गया। बताया जा रहा है कि,सीबीआई आगे की पूछताछ के लिए एक बार फिर रिमांड की मांग कर सकती है। वहीं, प्रवर्तन निदेशालय ने भी सौरभ चंद्राकर से पूछताछ के लिए अदालत में



रिमांड की मांग रखी थी, लेकिन फिलहाल श्वष्ठ को इसमें सफलता नहीं मिली। अदालत के आदेश के बाद सौरभ चंद्राकर को 19 नवंबर तक न्यायिक हिरासत में सेंट्रल जेल भेज दिया गया है। अब इस हाईप्रोफाइल मामले में आगे की जांच और दोनों केंद्रीय एजेंसियों की अगली कार्रवाई पर सबकी नजरें टिकी हुई हैं। सीबीआई मुख्यालय में आठ दिनों तक चली पूछताछ के दौरान सौरभ चंद्राकर से जुड़े कई अहम खुलासों की जानकारी सामने आई है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, पूछताछ में सौरभ ने महादेव ऐप के कथित लाइजनिंग नेटवर्क से अपनी भूमिका अलग बताई है। बताया जा रहा है कि, उसने लाइजनिंग का काम रवि उप्पल के जिम्मे होने की बात कही। वहीं, सौरभ ने कथित तौर पर पैनल ऑपरेशन और हवाला के जरिए होने वाले वित्तीय लेन-देन से जुड़े कामकाज की जिम्मेदारी संभालने की बात स्वीकार की है। हालांकि, इन दावों और पूछताछ में सामने आए बयानों की आधिकारिक पुष्टि अभी नहीं हुई है। सीबीआई की पूछताछ में शुभम सोनी का कथित वीडियो भी चर्चा का विषय रहा। इस वीडियो में शुभम सोनी ने दावा किया था कि सौरभ चंद्राकर और रवि उप्पल उसके अधीन काम करते थे। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, सीबीआई ने इसी वीडियो का हवाला देते हुए सौरभ से सवाल-जवाब किए। बताया जा रहा है कि वीडियो में किए गए दावों को लेकर पूछे गए।

गोली मारकर की गई हत्या

किश्तवाड़ में लापता दोनों एसपीओ के मिले शव.....

जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले के मारवाह स्थित देहरना जंगल में लापता हुए दो स्पेशल पुलिस ऑफिसर के शव बरामद किए गए हैं। दोनों जवानों की पहचान ऋषिपाल और बॉबी चंद के रूप में हुई है। शुरुआती जानकारी के मुताबिक, दोनों के शरीर पर गोलियों के निशान मिले हैं। घटना के बाद सुरक्षा एजेंसियों ने इलाके में तलाशी अभियान तेज कर दिया है। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ में दो पुलिस जवानों के शव मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई है। दोनों जवान स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप का हिस्सा थे और ड्यूटी के



दौरान लापता हो गए थे। सूत्रों के मुताबिक, मारवाह के देहरना जंगल इलाके में दोनों के शव बरामद हुए हैं। उनके शरीर पर गोलियों के निशान मिलने की बात सामने आई है। मृत जवानों की पहचान ऋषिपाल और बॉबी चंद के रूप में हुई है। दोनों कियार दच्छन से अपर रिज देहरना के इंदरवन इलाके में बसनान स्थित सेना की 17 राष्ट्रीय राइफल्स की टीम को रिलीव करने जा रहे थे।

15 नवंबर से शुरू होगी धान खरीदी, जिले के 31 केंद्रों में तैयारियां अंतिम चरण में

20 हजार 598 किसान बेच सकेंगे धान, अवैध परिवहन रोकने सीमावर्ती इलाकों में बनाए पांच चेकपोस्ट

मूक पत्रिका



बीजापुर/आशीष पदमवार। खरीफ विपणन वर्ष 2026-27 के तहत जिले में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी शुरू होने में अब महज तीन दिन शेष हैं। 15 नवंबर से जिले के 31 उपार्जन केंद्रों में धान खरीदी शुरू होगी। प्रशासन ने खरीदी को लेकर तैयारियां लगभग पूरी कर ली हैं। इस बार जिले के 20 हजार 598 पंजीकृत किसान अपना धान बेच सकेंगे। वहीं, दूसरे राज्यों से अवैध धान की आवक रोकने के लिए सीमावर्ती क्षेत्रों में पांच चेकपोस्ट स्थापित कर निगरानी की व्यवस्था की गई है।राज्य शासन के निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार धान खरीदी 15 नवंबर 2026 से शुरू होकर 15 जनवरी 2027 तक चलेगी। कलेक्टर विश्वदीप के मार्गदर्शन में सभी उपार्जन केंद्रों पर आवश्यक व्यवस्थाएं जुटाई जा रही हैं। किसानों को खरीदी के दौरान परेशानी न हो, इसके लिए बारदाने, पेयजल, छाया और बैठने की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं।इस वर्ष शासन ने पंजीकृत किसानों को प्रति एकड़ अधिकतम 21 क्विंटल धान बेचने की अनुमति दी है। समर्थन मूल्य के तहत कॉमन धान का भाव 2441 रुपए और ग्रेड-ए धान का भाव 2461 रुपए प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। किसानों को टोकन के लिए समितियों के चक्कर न लगाने पड़ें, इसके लिए 'तुम्हर टोकन' एप के जरिए घर बैठे ऑनलाइन टोकन प्राप्त करने की सुविधा भी दी गई है।

सीमाओं पर रहेगी निगरानी, पांच चेकपोस्ट बनाए

धान खरीदी के दौरान अवैध परिवहन और भंडारण की आशंका को देखते हुए प्रशासन ने जिले के सीमावर्ती और संवेदनशील मार्गों पर निगरानी बढ़ाई है। इसके लिए तीमेड, तारलागुड़ा, पामेड़, नेलसनार और बीजापुर में पांच चेकपोस्ट स्थापित किए गए हैं। इन चेकपोस्ट के माध्यम से दूसरे राज्यों से होने वाले अवैध धान परिवहन पर नजर रखी जाएगी। कलेक्टर ने खरीदी से जुड़े अधिकारियों और कर्मचारियों को शासन के दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए व्यवस्था सुचारू रखने तथा किसी भी स्तर पर लापरवाही नहीं बरतने के निर्देश दिए हैं।

भिलाई में 15 नवंबर को छत्तीसगढ़ राज्य स्तरीय सतनामी युवक-युवती परिचय सम्मेलन एवं आदर्श विवाह का आयोजन

मूक पत्रिका



भिलाई। सतनामी समाज में सामाजिक एकता, पारिवारिक संबंधों को मजबूती देने एवं विवाह योग्य युवक-युवतियों को उचित जीवनसाथी चुनने का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से गुरु घासीदास सेवा समिति, भिलाई नगर के सौजन्य से 15 नवंबर 2026, रविवार को सतनाम भवन, भिलाई में छत्तीसगढ़ राज्य स्तरीय सतनामी समाज युवक-युवती परिचय सम्मेलन एवं आदर्श विवाह समारोह का आयोजन किया जा रहा है।कार्यक्रम का शुभारंभ परम पूज्य गुरु घासीदास बाबा की पवित्र गुरु गद्दी की पूजा-अर्चना एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ होगा। इसके पश्चात अतिथियों का आगमन, स्वागत एवं उद्बोधन कार्यक्रम संपन्न होगा। सम्मेलन में विवाह योग्य युवक-युवतियों को अपना परिचय देने का अवसर प्रदान किया जाएगा। इसके बाद सामाजिक रीति-रिवाजों एवं आदर्श परंपराओं के अनुरूप आदर्श विवाह का आयोजन किया जाएगा।

आयोजन की प्रमुख जिम्मेदारी इन पदाधिकारियों पर

कार्यक्रम के प्रमुख आयोजकों में अध्यक्ष श्री भरत लाल कुर्रे, श्रीमती उर्मिला भास्कर, एन.आर. गिलहरे, रामचंद्र देशलहरा, दिवाकर गायकवाड़, टेकराम बंजारे एवं राजेन्द्र महिलांग शामिल हैं। वहीं कार्यक्रम प्रभारी के रूप में दिवाकर गायकवाड़, रूपेश बारले एवं रामचंद्र देशलहरा को जिम्मेदारी सौंपी गई है।आयोजकों का उद्देश्य समाज के युवक-युवतियों को एक साझा मंच उपलब्ध कराना, वैवाहिक संबंधों में पारदर्शिता को बढ़ावा देना तथा सामाजिक समरसता और एकजुटता को मजबूत करना है।

मुख्यमंत्री के प्रस्तावित दौरे की तैयारियों का विधायक ललित चंद्राकर ने लिया जायजा, अधिकारियों को दिए निर्देश

मूक पत्रिका



रिसाली। रिसाली नगर निगम क्षेत्र में विकास कार्यों को नई गति देने के उद्देश्य से आगामी दिनों में मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय का आगमन प्रस्तावित है। मुख्यमंत्री के इस प्रवास के दौरान क्षेत्र में विभिन्न विकास कार्यों का भूमिपूजन किया जाएगा।मुख्यमंत्री के प्रस्तावित आगमन एवं जनसभा की तैयारियों को लेकर विधायक श्री ललित चंद्राकर ने प्रस्तावित सभा स्थल का निरीक्षण किया और वहां की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने कार्यक्रम को लेकर आवश्यक तैयारियां समय पर पूर्ण करने तथा व्यवस्थाओं को लेकर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।निरीक्षण के दौरान कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक, एसडीएम एवं रिसाली नगर निगम आयुक्त सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। अधिकारियों से कार्यक्रम स्थल की व्यवस्था, सुरक्षा, साफ-सफाई एवं अन्य आवश्यक तैयारियों के संबंध में चर्चा की गई। इस अवसर पर पप्पू चंद्राकर, राजू जंघेल सहित भाजपा के स्थानीय पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सभी पात्र हितग्राहियों के राशन कार्ड बनाने और शेष ई-केवाईसी कार्य शिविर लगाकर पूर्ण करें - कलेक्टर

सड़क निर्माण एवं मरम्मत कार्यों में गुणवत्ता और समय-सीमा का विशेष ध्यान रखें

मूक पत्रिका



जांजगीर-चांपा। कलेक्टर जन्मेजय महोबे ने आज साप्ताहिक समय-सीमा की बैठक लेकर विभिन्न विभागों के कार्यों एवं लंबित प्रकरणों की समीक्षा की। उन्होंने मुख्यमंत्री हेल्पलाइन में प्राप्त आवेदनों एवं शिकायतों तथा उनके निराकरण की स्थिति की विभागवार विस्तार से जानकारी ली। कलेक्टर ने कहा कि आम नागरिकों से सीधे जुड़े आवेदनों एवं शिकायतों का संवेदनशीलता के साथ निराकरण किया जाए। निराकरण में गुणवत्ता सर्वोपरि है, इसलिए प्रत्येक शिकायत का संतुष्टिपूर्ण एवं गुणवत्तापूर्ण निराकरण सुनिश्चित किया जाए।कलेक्टर ने जिले के सभी पात्र हितग्राहियों के राशन कार्ड अनिवार्य रूप से बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जिन हितग्राहियों का ई-केवाईसी अब तक पूर्ण नहीं हुआ है, उनके लिए शिविर आयोजित कर ई-केवाईसी की प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण कराई जाए, ताकि कोई भी पात्र हितग्राही शासन की खाद्यान्न योजना के लाभ से वंचित न रहे। बैठक में कलेक्टर ने जिले में निर्माणाधीन एवं मरम्मत किए जा रहे सड़कों के कार्यों की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि सड़क निर्माण एवं मरम्मत कार्य निर्धारित समय-सीमा में गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण किए जाएं। कार्यों में किसी प्रकार की लापरवाही न हो और निर्माण कार्य निरंतर जारी रहें। उन्होंने कहा कि कार्यों की गुणवत्ता एवं समय-सीमा से किसी भी स्थिति में समझौता नहीं किया जाएगा। कलेक्टर ने निर्माण कार्यों के दौरान बारिश के समय सड़कों पर जलभराव की स्थिति निर्मित न हो, इसका विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए।

साथ ही जिला मुख्यालय जांजगीर में निर्माणाधीन डिवाइडर के कार्य को भी निर्धारित समय-सीमा में गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण करने को कहा। बैठक में कलेक्टर ने बैठक में जनकल्याणकारी योजनाओं एवं विकास कार्यों की प्रगति की भी समीक्षा की गई। इस दौरान पंचायत, शिक्षा, विद्युत, खाद्य, सहकारिता, नगरीय प्रशासन, महिला एवं बाल विकास, पशु चिकित्सा, मत्स्य पालन सहित अन्य विभागों की समीक्षा कर कलेक्टर ने आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

मतदाता सूची के प्रारंभिक प्रकाशन के संबंध में राजनैतिक दलों के पदाधिकारियों की बैठक आयोजित

मूक पत्रिका



जांजगीर-चांपा। भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली एवं मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी, छत्तीसगढ़, रायपुर के निर्देशानुसार जिले में अर्हता तिथि 01 जनवरी 2027 के संदर्भ में विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इसके अंतर्गत एकीकृत मतदाता सूची (निर्वाचक नामावली) का प्रारूप प्रकाशन किया गया। इस संबंध में कलेक्टर जन्मेजय महोबे ने राजनैतिक दलों के पदाधिकारियों की बैठक ली। बैठम में राजनैतिक दलों के पदाधिकारियों को जानकारी दी गई कि मतदाता सूची के प्रारूप प्रकाशन के पश्चात पुनरीक्षण से संबंधित विभिन्न गतिविधियां संचालित की जाएंगी। इसके अंतर्गत मतदान केंद्रों के युक्तियुक्तकरण, दावे एवं आपत्तियां प्राप्त करने तथा उनका निराकरण करने जैसी प्रक्रियाएं पूरी की जाएंगी। साथ ही राजनीतिक दलों के पदाधिकारियों एवं प्रतिनिधियों को आयोग द्वारा जारी निर्धारित प्रारूप की जानकारी देते हुए बूथ लेवल एजेंट नियुक्त करने के लिए आग्रह किया गया। बैठक में डिप्टी कलेक्टर एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी नीतिश वर्मा, निर्वाचन पर्यवेक्षक राकेश प्रधान, हितेश यादव, मोहन सिंह, शिशिर द्विवेदी, आशुतोष गोपाल, लखन लाल साहू, कीर्तन लाल साहू सहित संबंधित अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे। सभी मतदाताओं से अपील की गई है कि वे प्रकाशित प्रारूप मतदाता सूची में अपना नाम अवश्य जांच लें। मतदाता ऑनलाइन माध्यम से वोटर हेल्पलाइन मोबाइल ऐप अथवा भारत निर्वाचन आयोग की आधिकारिक वेबसाइट के माध्यम से अपना नाम देख सकते हैं। इसके अलावा ऑफलाइन माध्यम से अपने क्षेत्र के मतदान केंद्र में बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ) से संपर्क कर मतदाता सूची में अपना नाम जांच सकते हैं। विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत प्रारूप मतदाता सूची का प्रकाशन 12 नवंबर 2026 को किया गया है। दावा एवं आपत्तियां दर्ज कराने की अंतिम तिथि 11 दिसंबर 2026 निर्धारित है। प्राप्त दावों एवं आपत्तियों का निराकरण 28 दिसंबर 2026 तक किया जाएगा। इसके पश्चात मतदाता सूची के डेटाबेस का अद्यतन, पूरक सूची का मुद्रण एवं अंतिम प्रकाशन की तैयारी की जाएगी। मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन 04 जनवरी 2027 को किया जाएगा।

15 नवंबर से शुरू होगी समर्थन मूल्य पर धान खरीदी, तैयारियों को लेकर अधिकारियों-कर्मचारियों को दिया गया प्रशिक्षण

मूक पत्रिका



जांजगीर-चांपा। जिले में खरीफ विपणन वर्ष 2026-27 के तहत समर्थन मूल्य पर धान खरीदी 15 नवंबर से प्रारंभ होगी। धान खरीदी की तैयारियों एवं प्रक्रिया को लेकर आज कलेक्टोरेट सभाकक्ष में धान उपार्जन एवं कंट्रोल कमांड सेंटर टीम, नोडल अधिकारी, समिति प्रबंधकों का प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में कलेक्टर जन्मेजय महोबे शामिल हुए। इस दौरान अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धान खरीदी प्रक्रिया, टोकन जारी करने, एग्रीस्टैक पंजीयन, उपार्जन केंद्रों की निगरानी, भंडारण तथा विभिन्न स्तरों पर निर्धारित जिम्मेदारियों के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गई। कलेक्टर ने कहा कि समर्थन मूल्य पर धान खरीदी शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सभी अधिकारी-कर्मचारी प्रशिक्षण को गंभीरता से लेते हुए आपसी समन्वय के साथ कार्य करें, ताकि खरीदी प्रक्रिया पारदर्शी, व्यवस्थित एवं सुचारू रूप से संपन्न हो। उन्होंने निर्देश दिए कि खरीदी निर्धारित समय-सीमा में की जाए तथा किसानों को धान विक्रय के दौरान किसी प्रकार की परेशानी न हो। खरीदी के दौरान किसी भी प्रकार की समस्या आने पर तत्काल अवगत कराने के निर्देश भी दिए। कलेक्टर ने सभी उपार्जन केंद्रों में साफ-सफाई, फेंसिंग, विद्युत व्यवस्था, कंप्यूटर, प्रिंटर एवं इंटरनेट कनेक्टिविटी सुचारू रखने को कहा। साथ ही इलेक्ट्रॉनिक तौल यंत्र, बायोमेट्रिक डिवाइस, जनरेटर, बारदाने, आर्द्रता मापी यंत्र एवं सीसीटीवी कैमरों की पर्याप्त उपलब्धता और क्रियाशीलता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। धान की सुव्यवस्थित स्टैकिंग, नए एवं पुराने बारदानों को अलग-अलग रखने तथा धान की किस्म के अनुसार भंडारण की व्यवस्था करने को कहा। कलेक्टर ने किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए खरीदी केंद्रों में छाया, पेयजल, शौचालय एवं ड्रेनेज की समुचित व्यवस्था रखने तथा हमालों और डाटा एंट्री ऑपरेटरों की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने धान खरीदी एवं ऑनलाइन प्रविष्टि क्विंटल के आधार पर करने तथा किसानों को तुंहर टोकन मोबाइल ऐप की जानकारी देकर इसके उपयोग के लिए प्रोत्साहित करने को कहा, ताकि खरीदी प्रक्रिया में पारदर्शिता के साथ किसानों को भी सुविधा मिल सके।

माओवाद मुक्त गांवों में विकास की राह खोलने प्रशासन ने ग्रामीणों से मांगा सहयोग

केरपे-करकेली में कलेक्टर-एसपी की जनचौपाल

मूक पत्रिका



बीजापुर/आशीष पदमवार। माओवाद के प्रभाव से मुक्त हुए अंदरूनी गांवों में अब विकास और स्थायी शांति कायम रखने के लिए प्रशासन ग्रामीणों से सीधा संवाद कर रहा है। बीते गुरुवार को कलेक्टर विश्वदीप, एसपी उमेश प्रसाद गुप्ता और जिला पंचायत सीईओ नम्रता चौबे थाना बेदरे क्षेत्र के केरपे और करकेली पहुंचे। यहां जनचौपाल लगाकर ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं और उन्हें शासन की योजनाओं की जानकारी दी। अधिकारियों ने कहा कि क्षेत्र में माओवाद का प्रभाव खत्म होने के बाद शांति, सुरक्षा और विकास के नए अवसर बने हैं। इस माहौल को बनाए रखने में ग्रामीणों की भूमिका अहम है। प्रशासन ने ग्रामीणों से विकास कार्यों में भागीदारी निभाने और सरकारी योजनाओं का लाभ लेने की अपील की।

जल, जंगल, जमीन के नाम पर गुमराह करने वालों से रहें दूर-जनचौपाल में एसपी उमेश प्रसाद गुप्ता ने ग्रामीणों को बाहरी असामाजिक तत्वों के बहकावे में नहीं आने की समझाइश दी। उन्होंने कहा कि जल, जंगल और जमीन के नाम पर ग्रामीणों को गुमराह करने वाले तत्वों से दूरी बनाए रखें। क्षेत्र में शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए पुलिस-प्रशासन का सहयोग करें।

भर्ती और नक्सल पीड़ितों को मिलने वाली राहत बताई-अधिकारियों ने स्थानीय युवाओं को बस्तर फाइटर्स भर्ती में आवेदन करने के लिए प्रेरित किया। साथ ही भर्ती में नक्सल पीड़ितों को शासन की नीति के अनुसार मिलने वाली राहत और सुविधाओं की जानकारी दी। प्रशासन का जोर स्थानीय युवाओं को रोजगार के अवसरों से जोड़ने पर रहा।

ये अधिकारी रहे मौजूदः जनचौपाल में भैरमगढ़ और भोपालपटनम के एसडीएम, फरसेगढ़ एसडीओपी, भोपालपटनम और कुटरू के तहसीलदार, पटवारी तथा स्थानीय जनप्रतिनिधि भी शामिल हुए।

हड़ताल पर अड़े पटवारियों पर प्रशासन का एक्शन, 4 निलंबित

66 पटवारियों को नोटिस, उसूर के 12 पटवारियों की सेवा में ब्रेक इन सर्विस

मूक पत्रिका

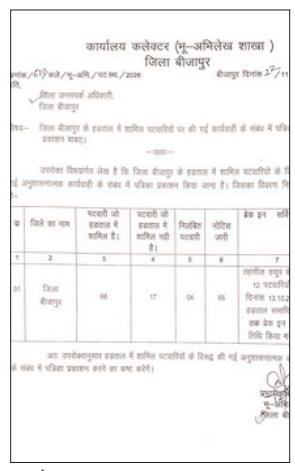

बीजापुर/आशीष पदमवार। पटवारियों की अनिश्चितकालीन हड़ताल को लेकर जिला प्रशासन ने सख्ती शुरू कर दी है। हड़ताल में शामिल चार पटवारियों को निलंबित कर दिया गया है। वहीं, 66 पटवारियों को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। इसके अलावा उसूर तहसील के 12 पटवारियों की हड़ताल अवधि को ब्रेक इन सर्विस घोषित करने की कार्रवाई की गई है। कलेक्टर कार्यालय की भू-अभिलेख शाखा के अनुसार जिले में कुल 83 पटवारी पदस्थ हैं। इनमें 66 हड़ताल पर हैं, जबकि 17 पटवारी काम कर रहे हैं। प्रशासन ने हड़ताल में शामिल कर्मचारियों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई करते हुए यह कदम उठाया है। गौरतलब है कि पटवारी संघ 13 अक्टूबर से प्रांतीय आह्वान पर अनिश्चितकालीन हड़ताल पर है। संघ की प्रमुख मांगों में पीडी एप की तकनीकी समस्याओं का समाधान, वेतन विसंगति दूर करने और पदोन्नति संबंधी समस्याओं का निराकरण शामिल है। मिली जानकारी अनुसार उसूर तहसील के 12 पटवारियों की 13 अक्टूबर से हड़ताल समाप्ति तक की अवधि को ब्रेक इन सर्विस घोषित किया गया है। लगातार जारी हड़ताल और प्रशासनिक कार्रवाई के बीच अब आंदोलन को लेकर आगे की स्थिति पर नजर रहेगी।

कार्रवाई का विवरण

- जिले में कुल पटवारी : 83
- हड़ताल में शामिल : 66
- काम पर मौजूद : 17
- निलंबित : 4
- कारण बताओ नोटिस : 66
- ब्रेक इन सर्विस की कार्रवाई : 12

संक्षिप्त समाचार

अंडा होने वाला है महंगा, 30% तक उछलेंगे रेट, अचानक दाम बढ़ने के पीछे वजह

नई दिल्ली, एजेंसी। सर्दियों के सीजन में त्योहारी मांग बढ़ने के साथ ही झटका लगने वाला है। देश में

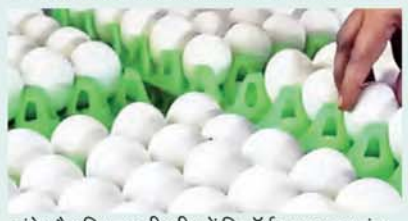

अंडे और चिकन की कीमतें रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच सकती हैं। पोल्ट्री इंडस्ट्री के मुताबिक, मक्के की जमाखोरी, इथेनॉल उत्पादन के लिए अनाज का डायवर्जन और महाराष्ट्र-कर्नाटक में कमजोर मॉनसून के चलते मक्के के साथ टूटे चावल के दाम पिछले एक साल में दोगुने हो चुके हैं। इस बढ़ती उत्पादन लागत का सीधा असर बाजार में दिखेगा। दिसंबर तक खुदरा और थोक बाजार में अंडे और बिना स्किन वाले चिकन की कीमतें भारी बढ़त दर्ज कर सकती हैं। क्रिसमस और न्यू ईयर की छुट्टियों के दौरान पोल्ट्री उत्पादों की खपत अपने चरम पर होती है। लेकिन, इस बार ग्राहकों को ज्यादा कीमत चुकानी पड़ेगी। इंडस्ट्री के वरिष्ठ अधिकारियों के अनुसार, अभी 6-7 रुपये पीस बिकने वाले थोक अंडे की कीमत दिसंबर तक 7-8 रुपये पीस हो सकती है। वहीं, बिना स्किन वाला ड्रेस्ड चिकन जो अभी 225-250 रुपये प्रति किलो पर उपलब्ध है, वह बढ़कर 260-275 रुपये प्रति किलो तक पहुंच सकता है। कुल मिलाकर दिसंबर तक पोल्ट्री उत्पादों के दामों में 25 से 30 फीसदी का सीधा इजाफा देखने को मिल सकता है। कीमतों में इस तेजी की मुख्य वजह पोल्ट्री फीड की कच्ची सामग्री का महंगा होना है। पिछले एक साल में मक्का और टूटे चावल के दाम करीब दोगुने हो गए हैं। बीते साल 18 रुपये किलो मिलने वाला मक्का अब 34 रुपये किलो बिक रहा है। दिसंबर तक इसके 40 रुपये पहुंचने की आशंका है। इसी तरह टूटे चावल की कीमत भी 14-15 रुपये प्रति किलो से बढ़कर 31-32 रुपये प्रति किलो हो चुकी है। पोल्ट्री इंडस्ट्री के लिए अन्य ऑप्शन जैसे ज्वार, बाजरा और रागी का इस्तेमाल करना भी अब काफी महंगा साबित हो रहा है।

बंधन बैंक समेत 5 बैंकों में 12 महीने की एफडी पर मिलेगा ज्यादा ब्याज

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में निवेश के कई सारे विकल्प हैं। इनमें से सबसे सुरक्षित विकल्पों में



फिक्स्ड डिपॉजिट यानी कि एफडी को एक माना जाता है। बैंक अपने ग्राहकों को 7 दिन से लेकर 10 साल तक की एफडी योजना की सुविधा देते हैं। ऐसे में लोग अपने हिसाब से पैसों को इन योजनाओं में लगाते हैं। इस बीच हम सिर्फ 12 महीने यानी कि एक साल की बैंक एफडी की बात कर रहे हैं। बंधन बैंक समेत यहां हम कुल पांच बैंकों को जानेंगे जो अपनी एफडी योजना पर एक साल में 6.7 प्रतिशत से लेकर 7.0 प्रतिशत तक सालाना ब्याज दे रहे हैं। बैंकों के नाम और ब्याज दर को जानते हैं। इसके साथ ही हम यह भी जानेंगे कि अगर कोई पात्र ग्राहक इनमें एक साल के लिए 10000 (10 हजार) रुपये की एफडी करता है तो उसे मैच्योरिटी पर कितने रुपये मिल सकते हैं। एक साल की बैंक एफडी की ब्याज दर कितनी है कई बैंक हैं जो कम से कम 7 दिनों की एफडी स्कीम की सुविधा देते हैं। हालांकि, यहां पर हम कम से कम 12 महीने यानी कि एक साल की एफडी की बात कर रहे हैं। इसके लिए पांच बैंक आपके लिए यहां बताए जा रहे हैं। इनमें सबसे पहले बात बंधन बैंक की। हमारे सहयोगी ईटी वेल्थ की एक रिपोर्ट के अनुसार, बंधन बैंक अपने पात्र ग्राहकों (सीनियर सिटीजन नहीं) को एक साल की एफडी पर 7 फीसदी का सालाना ब्याज देता है।

31 लाख का बजट और 42 लाख खर्च

शादी को कर्ज का जाल बनने से बचाने के लिए ना करें 5 गलतियां

नई दिल्ली, एजेंसी। साल 2026 अब अपने आखिरी पड़ाव में है। इसके बाद 2027 नए साल की शुरुआत होने वाली है। नया साल आने से पहले देश में शादी के सीजन शुरू होने जा रहे हैं। इस बीच किसी भी शादी को लेकर उसके बजट पर लोगों का खास ध्यान होता है।

जानकार बताते हैं कि किसी भी वेडिंग या शादी समारोह को बिना किसी आर्थिक परेशानी से अच्छे से संपन्न कराने में उसकी बजट प्लानिंग की अहम भूमिका होती है। इस दौरान लोग तय कर लेते हैं कि किस कार्य के लिए कितने रुपये खर्च किए जाने हैं। हालांकि, कई बार बजट से अधिक पैसा शादी में खर्च हो जाते हैं। एक ऐसा ही मामला गुजरात के वडोदरा से आया है। यहां एक शादी के लिए बजट 31 लाख रुपया था और खर्च करीब 42 लाख रुपये हो गए।

31 लाख का बजट और शादी में खर्च हो गए 42 लाख रुपये: हमारे सहयोगी ईटी वेल्थ की एक रिपोर्ट के अनुसार, हार्दिक और इशिता की शादी जनवरी 2025 में वडोदरा में हुई थी। इनकी शादी का बजट करीब 31 लाख रुपये था। लेकिन, वेडिंग संपन्न होने के बाद मालूम हुआ कि इसमें करीब 11 लाख रुपये अधिक यानी कि कुल 42 लाख रुपये खर्च हो गए हैं। इस बीच हम यहां कुल पांच ऐसी जरूरी बातों के बारे में चर्चा कर रहे हैं, जिनको शादी के लिए बजट बनाते समय खास ध्यान देना चाहिए। अगर आपके वेडिंग बजट से बाहर खर्च की समस्या होने वाली है या किसी को हुई है तो उन्हें पैसों से जुड़ी इन 5 गलतियों को करने से बचना चाहिए। इनमें महंगाई का ध्यान न रखना, क्रेडिट कार्ड या पर्सनल लोन का इस्तेमाल करना, इंश्योरेंस की खरीदारी ना करना, कोई इमरजेंसी फंड ना तैयार करना, लंबी अवधि के निवेश या सेविंग्स का इस्तेमाल करना शामिल है। आइए अब इन्हें थोड़ा विस्तार से जानते हैं।



शादी बजट में किन गलतियों को नहीं करनी चाहिए

देश के किसी भी घर में शादी होती है तो उससे पहले लोग एक बजट बनाते हैं। कई लोग इस बजट को लिखित में बनाते हैं और तय करते हैं कि किस कार्य के लिए कितना रुपया खर्च करना है। वहीं, कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो शादी के खर्च का अनुमान लगा लेते हैं और उस हिसाब से पैसों की व्यवस्था कर लेते हैं।

महंगाई को ध्यान न देना

शादी का बजट इसकी तारीख से कुछ महीने पहले से बनना शुरू हो जाता है। इस दौरान सबसे बड़ी गलती यह हो जाती है कि लोग महंगाई को ध्यान में नहीं रखते हैं और बजट बनाने लग जाते हैं। इसलिए महंगाई और ऐन मौके पर कीमतों में होने वाली बढ़ोतरी के असर से बचने के लिए आपको मुख्य बुकिंग्स खासकर वेन्यू, कैटरर्स और डेकोरेटर्स के रेट पहले से ही तय कर लेना चाहिए। तय की गई कीमतों, मिलने वाली सेवाओं और समय-सीमा को लिखित में रख लेना चाहिए। कई लोग ऐसे होते हैं जो शादी के लिए क्रेडिट कार्ड या फिर पर्सनल लोन या इन दोनों का इस्तेमाल करते हैं। रिपोर्ट के अनुसार, क्रेडिट लिमिट या पर्सनल लोन, ब्याज और फीस के कारण पहले से ही महंगी शादी को और भी महंगा बना सकते हैं। इसलिए, अगर आप क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करते भी हैं, तो ध्यान रखें कि बकाया राशि का पूरा भुगतान तय तारीख तक कर दिया जाए। हालांकि, आप यह भी कोशिश कर सकते हैं कि शादी के लिए इनका इस्तेमाल ही ना करना पड़े। देश में कई प्रकार के इंश्योरेंस की सुविधाएं हैं, जिनमें शादी के लिए भी यह शामिल है। कई लोग ऐसे होते हैं जो शादी के लिए इंश्योरेंस की खरीदारी ना करने की गलती करते हैं।

पूर्व सांसदों-विधायकों की पेंशन पर उठे सवाल, श्रीलंका की तरह इसे खत्म करने की मांग

नई दिल्ली, एजेंसी। पड़ोसी देश श्रीलंका के संसद ने कुछ महीने पहले एक ऐतिहासिक फैसला लिया था। फरवरी में सांसदों ने अपनी ही पेंशन बंद करने वाले विधेयक को भारी मतों से मंजूरी दी थी। इस विधेयक के पक्ष में 154 और विरोध में केवल दो वोट पड़े थे। इसके साथ ही 1977 में बना वह कानून खत्म हो गया जिसमें सांसदों के लिए पेंशन का प्रावधान था। अब भारत में भी इस तरह की मांग उठ रही है। भारत में पूर्व सांसदों और विधायकों को पेंशन के साथ-साथ कई तरह की सुविधाएं मिलती हैं। दिग्गज उद्योगपति और आरपीजी एंटरप्राइजेज के चेयरमैन हर्ष गोयनका के एक पोस्ट ने इस मुद्दे पर बहस छेड़ दी है। गोयनका ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, 'श्रीलंका ने अपने सांसदों की पेंशन खत्म कर दी है। पब्लिक ऑफिस एक जिम्मेदारी है, यह ताउम्र मिलने वाला कोई अधिकार नहीं है। टैक्सपेयर्स के पैसे का इस्तेमाल जनकल्याण के लिए होना चाहिए। खासकर हेल्थकेयर और एजुकेशन में काफी कुछ करने की जरूरत है। क्या भारत में भी राजनीतिक विशेषाधिकारों की समीक्षा का समय आ गया है' गोयनका के इस पोस्ट को करीब 1.63 लाख बार देखा जा चुका है। यूजर्स ने इस पर तरह-तरह के कमेंट किए हैं। अरविंद सिंघल नाम के एक यूजर ने लिखा, 'मिस्टर गोयनका, पेंशन से भी कहीं बुरी चीज है विधायकों और सांसदों को जीवन भर मिलने वाली सुविधाएं।

इंजीनियर कपल ने भांप ली जरूरत, इंस्टाग्राम से मिली पहचान, अब 10 लाख महीने की कमाई वाला बिजनेस



नई दिल्ली, एजेंसी। यह कहानी है बेंगलुरु के एक कपल की। इनके नाम दीया कृष्णकुमार और आदित्य नटराजन हैं। बतौर कंप्यूटर साइंस इंजीनियर वे आईटी सेक्टर में काम करते थे। उन्होंने महसूस किया कि दफ्तर की आपाधापी और लंबे कामकाजी घंटों के बीच हर दिन सेहतमंद खाना बनाना युवा प्रोफेशनल्स के लिए बोझ बन जाता है। इस जमीनी समस्या को भांपकर पति-पत्नी ने अपने स्टार्टअप की नींव रखी। सितंबर 2024 में इसकी शुरुआत हुई थी। यह स्टार्टअप पारंपरिक प्रोटीन-रिच स्वादिष्ट भारतीय भोजन को टिकाऊ स्टील के डब्बों में डिलीवर करता है। इस स्टार्टअप का मंथली रेवेन्यू अब 10 लाख रुपये तक पहुंच चुका है। आइए, यहां दीया कृष्णकुमार और आदित्य नटराजन की सफलता के सफर के बारे में जानते हैं।

पति-पत्नी ने शुरुआती दौर में 6 लोगों की टीम के साथ काम शुरू किया। इसमें एक न्यूट्रिशनिस्ट और कुक शामिल थे। दोनों ने प्लास्टिक पैकेजिंग के बजाय महाराष्ट्र से स्टील-लाइंड रीयूजेबल डिब्बे मंगवाए। इसका मकसद ग्राहकों को घरेलू टच देना था। स्टार्टअप का मेन्यू खास तौर पर काम में व्यस्त पेशेवरों के लिए बनाया गया है। इसमें टोफू, लो-फैट पनीर, सोया और चिकन जैसे प्रोटीन स्रोतों को दाल, आलू गोभी, बेसन शिमलामिर्च, बाजरा-ज्वार की रोटी और चावल जैसी परिचित भारतीय डिशेज के साथ शामिल किया जाता है। नए यूजर्स के लिए 3-दिन वाले ट्रायल पैक की कीमत 289 रुपये प्रति मील (फ्री डिलीवरी) से शुरू होती है। रेगुलर सब्सक्रिप्शन में खाने का औसत मूल्य 269 रुपये बैठता है। इसके अलावा, यात्रियों के लिए 'अनलिमिटेड कैरी-फॉरवर्ड' की सुविधा भी दी गई है। ऑपरेशंस स्थिर होने के बाद स्टार्टअप ने इंस्टाग्राम के जरिए मार्केटिंग पर फोकस किया। शुरुआत में बेंगलुरु की एक न्यूट्रिशनिस्ट के साथ हुए सहयोग से बनी एक रील सोशल मीडिया पर छा गई। इससे स्टार्टअप को तुरंत 100 से ज्यादा ग्राहक मिले। आज इनके कई रील्स को 20 लाख से ज्यादा व्यूज मिल चुके हैं।

ऐसे आया बिजनेस आइडिया

दीया और आदित्य एक ही कंपनी में काम करते थे। दोनों ने तीन साल से ज्यादा समय तक कंप्यूटर साइंस इंजीनियर के तौर पर यहां सेवाएं दीं। कॉर्पोरेट लाइफ की व्यस्तता के दौरान उन्होंने महसूस किया कि बाहर का खाना पेट की सेहत बिगाड़ता है। वहीं, खुद खाना पकाना समय की कमी के चलते मुमकिन नहीं हो पाता। जब उन्होंने बाजार में मौजूदा मील सब्सक्रिप्शन ऑप्शन की तलाश की तो पाया कि ज्यादातर कंपनियां बेहद फैंसी खाने पर फोकस कर रही थीं। पूरा करने के लिए दोनों ने अपनी नौकरी छोड़ दीं।

सींग, पूंछ और खौफनाक मुस्कान वाला वो राक्षस, जिसने ओनिडा को बनाया भारत का नंबर-1 टीवी ब्रांड

नई दिल्ली, एजेंसी। दूरदर्शन और 1980 के दशक के भारत में टीवी सेट सिर्फ एक उपकरण नहीं था। इसके बजाय यह पूरे परिवार का मुख्य आकर्षण और गर्व का विषय होता था। उस दौर में जब बाकी ब्रांड्स तकनीकी शब्दों के जाल में विज्ञापनों को उलझा रहे थे, ओनिडा ने बिल्कुल अलग प्रयोग किया। ब्रांड ने 'एवेन्यूज' एजेंसी के साथ मिलकर सींगों, पूंछ और खौफनाक मुस्कान वाले 'डेविल' के जरिए विज्ञापनों का स्थापित ढांचा ही तोड़ डाला। 'ईर्ष्या' जैसे निगेटिव आइडिया को हथियार बनाकर ओनिडा ने भारतीय विज्ञापनों के इतिहास में नया अध्याय लिखा। साथ ही अपनी बाजार हिस्सेदारी को 5 फीसदी से बढ़ाकर 20 फीसदी तक पहुंचा दिया। अपने विज्ञापनों में वे कठिन तकनीकी भाषा पर जोर देते थे। इसी भीड़ से अलग दिखने के लिए मर्क इलेक्ट्रॉनिक्स (ओनिडा) ने एवेन्यूज एजेंसी के आर्ट डायरेक्टर गोपी कुकडे के आइडिया को अपनाया। कुकडे ने ऐड कॉर्डिनेटर डेविड व्हिटब्रेड को एक अजीब, चुलबुले लेकिन खौफनाक 'डेविल' (राक्षस) के तौर पर पेश किया। टूटी स्क्रीन, हरा सांप और काली गुफा वाले इस डरावने ऐड ने हर भारतीय लिविंग रूम को चौंका दिया। इसे ओनिडा को सीधे स्टेटस सिंबल बना दिया। उस दौर में 'गोल्डस्पॉट' और 'पान पराग' जैसे ऐड खुशहाली और मिठास पर केंद्रित थे। इसके उलट ओनिडा ने 'नेबर्स एन्वी, ओनर्स प्राइड' यानी पड़ोसी की ईर्ष्या, मालिक का गर्व जैसी टैगलाइन से सीधे इंसानी जलन को छुआ। ब्रांड के पूर्व सीईओ वाई.वी. वर्मा के मुताबिक, इस शॉक-वैल्यू स्ट्रैटेजी के कारण ओनिडा की बाजार हिस्सेदारी 1981 में 5-6 फीसदी से उछलकर 1995 तक 19-20 फीसदी हो गई। इंडस्ट्री एक्सपर्ट्स का भी मानना था कि ओनिडा का ऐड सिर्फ इसलिए सफल साबित हुआ क्योंकि टीवी की अपनी स्टाइलिंग और प्रोडक्ट की क्वालिटी ने खरीदारों की बहुत ज्यादा बढ़ी हुई उम्मीदों को पूरा किया। दो दशकों तक ओनिडा के साथ रहने के बाद ब्रांड मैस्कट 'डेविल' की भूमिका में राजेश खेड़ा, आशीष चौधरी और आमिर बशीर जैसे कई अभिनेता आए। विज्ञापनों का जिम्मा ओगिल्वी और रीडिफ्यूजन जैसी एजेंसियों के पास बदला।





एयर इंडिया एक्सप्रेस को सात महीने से नहीं मिला सीईओ

नई दिल्ली, एजेंसी। टाटा ग्रुप की एयरलाइंस एयर इंडिया और एयर इंडिया एक्सप्रेस की टॉप पोस्ट पर दो अलग-अलग ष्टश्वह्व ना रखकर एक ही से काम चलाया जा सकता है। सूत्रों का कहना है कि इस बात को बल इस साल 19 मार्च को आलोक सिंह द्वारा एयर इंडिया एक्सप्रेस के ष्टश्वह्व के पद से इस्तीफा देने के बाद से भी मिल रहा है। सात महीने से अधिक का समय बीत जाने के बाद अभी तक एयर इंडिया एक्सप्रेस को अपना कोई स्थायी ष्टश्वह्व नहीं मिल सका है। इससे खर्चे कम करने की दिशा में कंपनी की 'वन एयर इंडिया' पॉलिसी के तहत लग रहा है कि आने वाले समय में दोनों एयरलाइंस का एक ही ष्टश्वह्व होगा। हालांकि, इस बारे में अभी तक दोनों एयरलाइंस में से किसी ने भी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की है। लेकिन एक अक्टूबर को एयर इंडिया के और एमडी का चार्ज संभालने के बाद और पहले टेवोल्डे गेब्रेमरियम सीधे तौर पर दोनों एयरलाइंस में बिना जरूरत वाले खर्चे कम करने की बात कह रहे हैं। इससे इस बात के संकेत मिल रहे हैं कि आने वाले समय में दोनों एयरलाइंस के लिए एक ही होंगे। जिसकी जिम्मेदारी एयर इंडिया के मौजूदा गेब्रेमरियम को ही दी जा सकती है, जो की अभी भी इसकी देखरेख कर ही रहे हैं।

चीनी और तेल के बाद कपड़ों की धुलाई भी हुई महंगी, फेस्टिव सीजन के बीच इस दिग्गज कंपनी ने बढ़ाए दाम

नई दिल्ली, एजेंसी। फेस्टिव सीजन के बीच ग्राहकों को महंगाई का झटका लगा है। खाने-पीने की चीजों, चीनी और खाद्य तेल की कीमत पहले से ही काफी बढ़ गई हैं। अब साबुन और सर्फ की कीमतें भी बढ़ गई हैं।



एफएमसीजी क्षेत्र की प्रमुख कंपनी हिंदुस्तान यूनिलीवर लिमिटेड ने सर्फ एक्सेल, रिन और व्हील जैसे लोकप्रिय डिटर्जेंट ब्रैंड्स सहित अपने होम केयर पोर्टफोलियो के कई उत्पादों की अधिकतम खुदरा कीमतों में 11 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी की है। कंपनी की सीईओ प्रिया नायर के मुताबिक इनपुट कॉस्ट में बढ़ोतरी के कारण मार्जिन बचाने के लिए यह कदम उठाया गया है। कीमतों में यह बदलाव अलग-अलग पैक साइज पर लागू हुआ है, जिसमें 1 रुपये से लेकर 10 रुपये तक की बढ़ोतरी की गई है। कंपनी ने एमआरपी 10 रुपये बढ़ाकर 235 रुपये से 245 रुपये कर दी है। इसका 500 ग्राम का पैक 5 रुपये महंगा हो गया है। इसी तरह कीमत 5 रुपये बढ़कर 172 रुपये हो गई है। इसका 500 ग्राम वाला पैक अब 85 के बजाय 87 रुपये में मिलेगा। (250 ग्राम) की एमआरपी 3 रुपये बढ़ाकर 45 रुपये कर दी गई है, जबकि चार बार वाले बंडल (प्रत्येक 200 ग्राम) की कीमत 10 रुपये बढ़कर 155 रुपये हो गई है। ने अपने रिन और व्हील ब्रैंड के उत्पादों के दाम भी बढ़ाए हैं। 500 एमएल की कीमत 5 रुपये बढ़ाकर 95 रुपये कर दी गई है। 500 ग्राम के पैक में 3 रुपये और 2 रुपये तक की बढ़ोतरी की गई है। कंपनी ने किलो की कीमत 3 रुपये बढ़ाकर 93 रुपये कर दी है। इसका 500 ग्राम का पैक अब 46 रुपये के मुकाबले 47 रुपये में मिलेगा। होम केयर प्रोडक्ट्स के अलावा, साबुन (150 ग्राम) की एमआरपी 8 रुपये बढ़ाकर 74 रुपये से 82 रुपये कर दी है, जो 10 प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी दर्शाती है। माना जा रहा है कि एफएमसीजी सेक्टर की दूसरी कंपनियां भी आने वाले दिनों में अपने प्रोडक्ट्स की कीमत में इजाफा कर सकती हैं।

चीनी की कीमत

इस बीच चीनी का उत्पादन पिछले साल के मुकाबले चार गुना बढ़ने के बावजूद रिटेल मार्केट में कीमत कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। इंडियन शुगर एंड बायो एनर्जी मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन के मुताबिक 5 नवंबर तक देश में चीनी का उत्पादन 12.85 लाख टन पहुंच गया है जबकि पिछले साल समान अवधि में यह 320000 टन था। फेस्टिव सीजन में बाजार में उपलब्धता बढ़ाने के लिए मिलों ने समय से पहले ही गन्ने की पेराई शुरू कर दी थी।

क्रेडिट कार्ड के वो 'हिडन चार्ज', जो आपकी जेब में लगा सकते हैं सेंध, कैशबैक के चक्कर में कहीं हो ना जाए बड़ा नुकसान!

नई दिल्ली, एजेंसी। वैसे तो सालभर लोग किसी न किसी जरूरी कार्य जैसे शॉपिंग, टिकट बुकिंग, किसी महंगी चीज की खरीदारी के लिए पेमेंट और ईएमआई समेत अन्य खर्चों के लिए क्रेडिट कार्ड्स का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन, फेस्टिव सीजन में इसकी मांग और यूज दोनों ही बढ़ जाते हैं। इसको देखते हुए देश के कई बैंक अपने-अपने इन कार्ड्स पर पात्र ग्राहकों को कई ऑफर्स, रिवॉर्ड पॉइंट्स और कैशबैक समेत अन्य सुविधाएं देते हैं। ग्राहक क्रेडिट कार्ड्स पर इन फायदों को देखते हुए उन्हें लेने से लिए हां भी कर देते हैं। लेकिन, क्या आपने कभी सोचा है कि इन कार्ड्स की कुछ फीस और खासकर के हिडन चार्ज भी होते हैं अगर आप इनको जाने बिना किसी क्रेडिट कार्ड को लेते हैं तो हो सकता है कि ये चार्जेज आपकी जेब में सेंध लगा दें और इससे आपको बड़ा नुकसान भी हो सकता है। इसलिए इन नुकसान से बचने या सतर्क रहने के लिए आपको क्रेडिट कार्ड्स के कुछ हिडन चार्ज को पहले ही जान लेना चाहिए। सबसे पहले हम जॉइनिंग फीस की बात करेंगे। देश के कई बैंक हैं जो अपने क्रेडिट कार्ड पर ग्राहकों से जॉइनिंग फीस लेते हैं। यह फीस केवल एक बार लगती है।



कैश विड्रॉल फीस

देश के कई बैंक हैं जो अपने क्रेडिट कार्ड से ग्राहकों को कैश विड्रॉल की सुविधा देते हैं। मतलब कि आप एटीएम का इस्तेमाल करके इन कार्ड्स के जरिए कैश निकाल सकते हैं। लेकिन, क्रेडिट कार्ड से कैश निकासी पर मोटा चार्ज लगता है। बैंक आपसे कैश विड्रॉल फीस लेते हैं। जानकारी के अनुसार, क्रेडिट कार्ड से कैश निकासी या नकद निकासी पर निकाली गई कुल रकम का करीब 2 फीसदी से 3 फीसदी या उससे अधिक का चार्ज लग सकता है।

एनुअल फीस

कई बैंक अपने क्रेडिट कार्ड के लिए जॉइनिंग फीस नहीं लेते हैं, लेकिन वे इसके लिए एनुअल फीस लेते हैं। एनुअल फीस जिसे वार्षिक या सालाना शुल्क भी कहते हैं यह एक प्रकार का चार्ज होता है, जो बैंक आपके द्वारा क्रेडिट कार्ड को यूज करने और उसकी सेवाओं को आपके तक पहुंचाने के साथ उसे मेंटेन करने के लिए लेते हैं। इन चार्ज को मेंटेनेंस चार्ज भी कह सकते हैं। कई बैंक जॉइनिंग फीस और एनुअल फीस दोनों ही लेते हैं।

लेट पेमेंट चार्ज

अगर आप क्रेडिट कार्ड के बकाया रुपये या राशि का भुगतान समय पर नहीं करते हैं तो आपको लेट पेमेंट चार्ज देना पड़ सकता है। बैंक ड्यू डेट से पहले या इस डेट तक आपसे उम्मीद करते हैं कि आप बकाया राशि का भुगतान कर दें। अगर कोई नहीं करता है तो उसे लेटे पेमेंट चार्ज के साथ बकाया राशि को जमा करना होता है। इससे आपकी जेब पर असर पड़ता है और आपको आर्थिक रूप से नुकसान होने का खतरा होता है। जब आप भारतीय क्रेडिट कार्ड को विदेशों में इस्तेमाल करते हैं और रुपये का भुगतान आप किसी विदेशी करेंसी जैसे डॉलर, यूरो आदि में करते हैं तो बैंक आपसे फॉरेन करेंसी मार्कअप लेता है।

संपादकीय

सड़क हादसों में जाती जानें और सुरक्षा के प्रति व्यवस्था की जवाबदेही

मुजफ्फरनगर हादसे में कार के भीतर जिंदा जलकर छह युवकों की मौत ने एक बार फिर सड़क सुरक्षा के दावों, निर्माण संबंधी खामियों और व्यवस्था की जवाबदेही पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में सड़क हादसे में छह युवकों की जिंदा जलकर मौत केवल एक दुर्घटना नहीं, बल्कि सड़क सुरक्षा के दावों और सरकारी व्यवस्था की जवाबदेही पर सवाल है। हरियाणा के हिसार से हरिद्वार जा रहे छह युवकों की कार तड़के पथ-विभाजक और बिजली के खंभे से टकराकर पलट गई।

देखते ही देखते उसमें आग लगी और छह जिंदगियां खत्म हो गईं।खबरों के मुताबिक, कार की रफ्तार अधिक थी और चालक ने नियंत्रण खो दिया। तेज रफ्तार निस्संदेह जानलेवा है, पर जिस राजमार्ग पर कार पथ-विभाजक से टकराई, वहां बिजली का खंभा सड़क के इतने करीब क्यों था कि वह मौत का सामान बन गया? सड़कें बनाते समय सुरक्षित दूरी और परावर्तक संकेतकों के मानक कहां गए?

केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी भी स्वीकार कर चुके हैं कि सड़क की बनावट और अभियांत्रिकी संबंधी खामियां हादसों की वजह बनती हैं। फिर भी सड़क निर्माण और रखरखाव में सुरक्षा के मानकों को सर्वोच्च प्राथमिकता क्यों नहीं दी जाती?इस हादसे का एक भयावह पहलू यह है कि कार में आग लगने के बाद भीतर फंसे लोग बाहर नहीं निकल सके। घटना की जांच के बाद इसके कारण शायद साफ होंगे।

मगर आधुनिक कारों में टक्कर के बाद दरवाजों के स्वचालित तरीके से बंद होने या उनके जाम होने की आशंका भी वाहन में फंसे लोगों की मौत का एक कारण बन रहे हैं।वाहन निर्माता कंपनियों और नियामक संस्थाओं से पूछे जाने की जरूरत है कि आग लगने अथवा दुर्घटना के बाद आपात स्थिति में दरवाजा खोलने और यात्रियों के बाहर निकलने की व्यवस्था कितनी भरोसेमंद है।

सड़क सुरक्षा के नाम पर नियम, अभियान व जागरूकता कार्यक्रम चलते रहते हैं, लेकिन दुर्घटनाओं के बाद व्यवस्थागत जवाबदेही तय नहीं हो पाती।सड़क की खामियां, संकेतकों की कमी, आपातकालीन सहायता, वाहनों की सुरक्षा और रफ्तार पर नियंत्रण की प्रणाली आदि की भी जांच होनी चाहिए।

सड़क सुरक्षा प्रशासनिक जवाबदेही, इंजीनियरिंग गुणवत्ता और वाहन सुरक्षा का संयुक्त प्रश्न है। अक्सर देखने को मिलता है कि हादसों की जांच वास्तव में कारण खोज कर उन्हें रोकने के लिए नहीं, बल्कि जिम्मेदारी टालने के लिए होती है।

विकास की वेदी पर बलि चढ़ती प्रकृति

जब हम एक लाख पेड़ काटते हैं, तो हम केवल लकड़ी का नुकसान नहीं कर रहे होते, बल्कि हम हिमालय की संवेदनशील और दरकती पहाड़ियों की जड़ों को कमजोर कर रहे होते हैं, जिससे भविष्य में विनाशकारी भूस्खलन, अचानक आने वाली बाढ़ और बड़े पर्यावरणीय असंतुलन का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। विकास और पर्यावरण के इस अंतहीन टकराव में अब हमें पुराने प्रशासनिक तौर-तरीकों से हटकर सोचने की सख्त जरूरत है। यदि इन पेड़ों को काटना एक अपरिहार्य तकनीकी मजबूरी है।



(अशोक भाटिया)

जब हम एक लाख पेड़ काटने की बात करते हैं, तो प्रशासनिक फाइलों पर यह केवल एक निर्जीव संख्या की तरह दिखता है, लेकिन प्रकृति के विज्ञान में यह सदियों की अनवरत तपस्या का अंत है। इंसानी हाथों द्वारा लगाए जाने वाले कृत्रिम बागानों और प्राकृतिक वनों के बीच एक ऐसा अंतर होता है जिसे कभी पाटा नहीं जा सकता। अरुणाचल प्रदेश केशी योमी और सियांग जिलों में सियोम नदी पर प्रस्तावित 1,000 मेगावाट की नायिंग जलविद्युत परियोजना को पर्यावरण मंत्रालय की वन सलाहकार समिति द्वारा प्राथमिक मंजूरी दे दी गई है। राष्ट्रीय सुरक्षा और ग्रिड स्थिरता के लिहाज से बेहद अहम मानी जा रही इस परियोजना के लिए लगभग 470 हेक्टेयर वन भूमि का इस्तेमाल होगा, जिसके कारण इस अति-संवेदनशील हिमालयी क्षेत्र से एक लाख से अधिक हरे-भरे पेड़ों को काट दिया जाएगा। यह खबर औद्योगिक और ढांचागत विकास के मोर्चे पर जितनी सकारात्मक लगती है, पारिस्थितिकी और पर्यावरण संरक्षण के लिहाज से उतनी ही भयावह है। पूर्वोत्तर भारत, विशेष रूप से अरुणाचल प्रदेश, अपने सघन वर्षावनों और दुर्लभ जैव-विविधता के लिए दुनिया भर में मशहूर है। ऐसे में विकास के नाम पर एक लाख से अधिक जीवित वृक्षों की सामूहिक बलि देना कई गंभीर सवाल खड़े करता है। क्या यह प्राकृतिक तबाही वाकई अपरिहार्य थी? क्या इस अभूतपूर्व नुकसान की भरपाई संभव है? और इस विनाश के बदले अरुणाचल प्रदेश तथा वहां के मूल निवासियों को वास्तव में क्या हासिल होने वाला है?

गौरतलब है कि बिजली घर, सुरंगें और भारी मशीनरी स्थापित करने के लिए एक बहुत बड़े भूभाग की जरूरत है। इस विवाद में सबसे बुनियादी सवाल यह है कि क्या इतने बड़े पैमाने पर जंगलों को उजाड़े बिना बांध का निर्माण संभव नहीं था? जलविद्युत परियोजनाओं की तकनीकी रूपरेखा पूरी तरह से नदियों के प्रवाह और पानी के विशाल संचय पर टिकी होती है। नायिंग परियोजना के लिए विशालकाय बांधजिस क्षेत्र में यह बांध प्रस्तावित है, वह उच्च संरक्षण मूल्य वाले घने जंगलों के अंतर्गत आता है। इंजीनियरिंग और जलविज्ञान के नियमों के मुताबिक, जब बांध के जरिए नदी के पानी को रोका जाता है, तो उसके पीछे का एक बहुत बड़ा इलाका पूरी तरह से जलमग्न हो जाता है। इस डूब क्षेत्र में आने वाले सभी पेड़ों और वनस्पतियों को पहले ही काट देना तकनीकी और सुरक्षा कारणों से जरूरी माना जाता है। यदि इन पेड़ों को बिना काटे वैसे ही पानी में डूबने के लिए छोड़ दिया जाए, तो पानी के भीतर वे सड़ने लगते हैं। इस सड़न से बड़े पैमाने पर मीथेन और कार्बन डाइऑक्साइड जैसी खतरनाक ग्रीनहाउस गैसों का भारी उत्सर्जन होता है, जो पानी की गुणवत्ता को नष्ट कर पूरे जलीय पारिस्थितिकी तंत्र को तबाह कर देती हैं। यही वजह है कि जलाशय की जलधारण क्षमता बनाए रखने के लिए इन एक लाख पेड़ों को हटाना सरकारी ब्लूप्रिंट में एक व्यावहारिक विवशता बन जाता है।

जब हम एक लाख पेड़ काटने की बात करते हैं, तो प्रशासनिक फाइलों पर यह केवल एक निर्जीव संख्या की तरह दिखता है, लेकिन प्रकृति के विज्ञान में यह सदियों की अनवरत तपस्या का अंत है। इंसानी हाथों द्वारा लगाए जाने वाले कृत्रिम बागानों और प्राकृतिक वनों के बीच एक ऐसा अंतर होता है जिसे कभी पाटा नहीं जा सकता। एक सामान्य पौधा लगाने के बाद उसे एक परिपक्व वृक्ष बनने में भले ही 15 से 20 वर्ष का समय लगता हो, लेकिन जब हम एक वास्तविक जंगल की बात करते हैं, तो वह केवल पेड़ों का समूह नहीं बल्कि एक जटिल और आत्मनिर्भर पारिस्थितिकी तंत्र होता है। अरुणाचल प्रदेश के ये जंगल अत्यधिक घने वन की श्रेणी में आते हैं, जिनमें सदियों पुराने विशालकाय ओक, पाइन और देवदार के वृक्ष शामिल हैं। इस तरह के एक समृद्ध वर्षावन को पूरी तरह से अपने मूल प्राकृतिक स्वरूप में लौटने के लिए कम से कम 80 से 150 वर्ष का लंबा वक्त लगता है। इन प्राकृतिक वनों में कई स्तरों पर वनस्पतियां, मिट्टी की सूक्ष्म जैविक संरचना, कवक और स्थानीय जीव-जंतुओं का एक पूरा संसार विकसित होता है। विडंबना यह है कि इंसानी प्रयासों द्वारा किए जाने वाले प्रतिपूरक वनीकरण में लगाए गए पौधों में से केवल 20 से 25 प्रतिशत ही जीवित रह पाते हैं। इसलिए कोई भी कृत्रिम रोपण कभी भी उस प्राकृतिक जैव-विविधता का विकल्प नहीं बन सकता जो प्रकृति ने सदियों के क्रमिक विकास से तैयार की है।

भारतीय वन कानूनों के तहत, जब भी किसी विकास परियोजना के लिए वन भूमि का डायवर्जन किया जाता है, तो निर्माण एजेंसी से प्रतिपूरक वनीकरण के तहत भारी आर्थिक हर्जाना वसूला जाता है। नायिंग परियोजना के लिए भी समिति ने सख्त शर्तें लगाई हैं, जिसके तहत काटे गए पेड़ों की संख्या से दोगुनी संख्या में नए पेड़ लगाने और नष्ट हुए वन्यजीव आवासों के पुनरुद्धार के लिए व्यापक योजना का खर्च उठाना होगा। परंतु, इस हर्जाने की नीति में एक बहुत बड़ी भौगोलिक विसंगति हमेशा से मौजूद रही है। अरुणाचल प्रदेश का लगभग 80 प्रतिशत भूभाग पहले से ही सघन वनों से ढका हुआ है, जिसके कारण राज्य के भीतर वनीकरण के लिए अतिरिक्त गैर-वन भूमि मिलना लगभग नामुमकिन होता है। इसी वजह से पूर्व की कई परियोजनाओं के अनुभवों को देखें, तो अरुणाचल में काटे जाने वाले वनों का हर्जाना और नया वनीकरण मध्य प्रदेश या अन्य मैदानी राज्यों में सैकड़ों किलोमीटर दूर खाली पड़ी भूमि पर करने का प्रस्ताव दिया जाता रहा है। यह प्रक्रिया कानूनी कागजों पर भले ही हर्जाना मान ली जाए, लेकिन पारिस्थितिकी के तराजू पर यह पूरी तरह निरर्थक है। अरुणाचल के संवेदनशील पूर्वी हिमालयी क्षेत्र में जो एक लाख पेड़ कटेंगे, उससे वहां की स्थानीय जलवायु, वर्षा का चक्र, भूस्खलन की आवृत्ति और वन्यजीवों का प्राकृतिक आवास हमेशा के लिए खत्म हो जाएगा, जिसकी भरपाई देश के किसी अन्य कोने में पेड़ लगाकर कभी नहीं की जा सकती।

इस भारी प्राकृतिक कीमत को चुकाने के बाद यह जानना जरूरी है कि इस पूरे सौदे से अरुणाचल प्रदेश और उसके नागरिकों को अंततः क्या हासिल होने वाला है। सरकार के आर्थिक तथा रणनीतिक रोडमैप के अनुसार, यह परियोजना अरुणाचल को बिजली आधिक्य राज्य बनाने और उसकी आर्थिक रीढ़ को मजबूत करने की दिशा में एक बड़ा कदम साबित होगी। इसके क्रियान्वयन से अरुणाचल प्रदेश को उत्पादित होने वाली कुल बिजली का 12 प्रतिशत हिस्सा रॉयल्टी के रूप में पूरी तरह मुफ्त मिलेगा, जिसे ग्रिड या अन्य राज्यों को बेचकर राज्य सरकार हर साल करोड़ों रुपये का राजस्व अर्जित कर सकती है। इसके अतिरिक्त, निर्माण और संचालन के चरणों में स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे। सुदूरवर्ती और दुर्गम जिलों में पक्की सड़कों, पुलों, अस्पतालों और आधुनिक स्कूलों का विकास होगा, जो स्थानीय कनेक्टिविटी और जीवन स्तर को ऊपर उठाएगा। सबसे महत्वपूर्ण पहलू इसका सामरिक सुरक्षा से जुड़ा है; चीन की सीमा के निकट होने के कारण इस नदी के निचले हिस्से पर भारत द्वारा इन बड़े बांधों का निर्माण करना बेहद जरूरी है, ताकि ऊपरी तटीय क्षेत्र में चीन द्वारा बनाए जा रहे विशाल बांधों के जवाब में भारत अपने अंतरराष्ट्रीय जल अधिकारों को मजबूती से सुरक्षित कर सके।

निष्कर्ष के तौर पर यह स्पष्ट है कि नायिंग जलविद्युत परियोजना को मंजूरी मिलना भारत की ऊर्जा सुरक्षा और सामरिक नीतियों की एक बड़ी जीत हो सकती है, लेकिन एक लाख पेड़ों की यह सामूहिक बलि इस जीत पर पर्यावरण की ओर से एक गहरा दाग भी है। जब हम एक लाख पेड़ काटते हैं, तो हम केवल लकड़ी का नुकसान नहीं कर रहे होते, बल्कि हम हिमालय की संवेदनशील और दरकती पहाड़ियों की जड़ों को कमजोर कर रहे होते हैं, जिससे भविष्य में विनाशकारी भूस्खलन, अचानक आने वाली बाढ़ और बड़े पर्यावरणीय असंतुलन का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। विकास और पर्यावरण के इस अंतहीन टकराव में अब हमें पुराने प्रशासनिक तौर-तरीकों से हटकर सोचने की सख्त जरूरत है। यदि इन पेड़ों को काटना एक अपरिहार्य तकनीकी मजबूरी है, तो इसके हर्जाने के तहत होने वाले वनीकरण को महज कागजी खानापूर्ति या दूसरे राज्यों में पेड़ लगाने की औपचारिकता तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। इसके बजाय सरकार और निर्माण कंपनियों को अरुणाचल के ही स्थानीय, भूस्खलन-संवेदनशील इलाकों में वैज्ञानिक पद्धतियों और आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके युद्धस्तर पर सघन वनों को पुनर्जीवित करने का जिम्मा उठाना होगा, क्योंकि विकास केवल तभी तक टिकाऊ और सार्थक है जब तक प्रकृति हमें खुलकर सांस लेने की अनुमति देती है। **(लेखक वरिष्ठ स्वतंत्र पत्रकार, लेखक, समीक्षक एवं टिप्पणीकार। इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)**

तेज आर्थिक विकास पर..कुपोषण की चुनौती अब भी गंभीर

(देवेंद्रराज सुथार)

वैश्विक भूख सूचकांक 2026 के ताजा आंकड़ों ने एक बार फिर नीति-निर्माताओं को आत्मचिंतन के लिए विवश कर दिया है। आयरलैंड की संस्था कंसर्न वर्ल्डवाइड और जर्मनी की वेल्टहंगरहिल्फे की ओर से जारी इस वार्षिक रिपोर्ट में 122 देशों की सूची में भारत 100वें स्थान पर है। देश का भूख अंक 24.1 है, जो उसे 'गंभीर' श्रेणी में रखता है। वैश्विक औसत 18.1 है, यानी 'मध्यम' स्तर।

विडंबना यह है कि एक ओर हम दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में गिने जाते हैं, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुमान के मुताबिक 2027 तक चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर हैं, दूसरी ओर बुनियादी पोषण की कसौटी पर हमारा प्रदर्शन विकास के दावों की जमीनी हकीकत सामने रख देता है। जब एक बड़ी आबादी को पौष्टिक भोजन के लिए रोज संघर्ष करना पड़े, तो आर्थिक प्रगति की चमक फीकी लगने लगती है। यह सूचकांक केवल पेट की आग का पैमाना नहीं, बल्कि मानव संसाधन की सेहत का आईना है। इसकी गणना चार संकेतकों पर होती है। अल्पपोषण, बाल 'स्टंटिंग', यानी उम्र के हिसाब से कम कद, बाल 'वेस्टिंग' यानी कद के हिसाब से कम वजन और पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर। भारत में करीब 9.8 फीसद आबादी अल्पपोषित है, यानी उसे जरूरी न्यूनतम कैलोरी भी नहीं मिल पाती। पांच साल से कम उम्र के लगभग 29.3 फीसद बच्चे ठिगनेपन के शिकार हैं, जिसका अर्थ है कि उनके शारीरिक और मानसिक विकास की नींव बचपन में ही कमजोर पड़ गई। कम वजन वाले बच्चों की दर 19 फीसद है, जो दक्षिण एशिया में सबसे ऊंची है और बच्चों में गंभीर, तात्कालिक कुपोषण की ओर संकेत करती है। पांच साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर 2.7 फीसद दर्ज हुई है।

यह भी सच है कि सन 2000 में भारत का स्कोर 38.1 था और ठिगनापन 50 फीसद था, यानी लंबी अवधि में सुधार हुआ है। मगर सवाल उसकी रफ्तार का है। जब लगभग हर दस में से तीन बच्चे ठिगनेपन के शिकार हों, तो डिजिटल और सशक्त भविष्य की कल्पना अधूरी ही रहेगी। सरकारी गलियारों से अक्सर ऐसी अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए जाते हैं। तर्क दिया जाता है कि नमूने का आकार छोटा है या अध्ययन की पद्धति दोषपूर्ण है। पद्धति पर बहस जरूर होनी चाहिए, लेकिन क्या इससे जमीनी सच्चाई बदल जाती है? राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 (2019-21) के सरकारी आंकड़े भी बताते हैं कि 15 से 49 वर्ष की 57 फीसद महिलाएं और 15 से 19 वर्ष की 59.1 फीसद किशोरियां एनीमिया यानी रक्ताल्पता से ग्रस्त हैं। जब मां खुद कमजोर और कुपोषित होगी, तो स्वस्थ शिशु को जन्म देना कठिन हो जाता है। यह कुपोषण का ऐसा दुश्चक्र है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी देश की कार्यक्षमता को क्षीण करता है। रिपोर्ट के अनुसार 2018 से 2026 के बीच भारत का स्कोर 25.8 से घटकर केवल 24.1 हुआ है, यानी महज 1.7 अंक की कमी। इसी अवधि में नेपाल का स्कोर 18.4 से 14.5 पर आ गया, अर्थात 3.9 अंक का सुधार। आंकड़ों को नकारने से न पेट की भूख मिटती है, न किसी बच्चे का कद बढ़ता है।

भारतीय कृषि हर साल भारी पैदावार देती है और सरकार प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत 80 करोड़ से अधिक लोगों को मुफ्त राशन देती है। यह योजना करोड़ों लोगों को भुखमरी के तात्कालिक संकट से बचाती है, मगर नीतिगत चूक तब होती है जब 'पेट भरने' को ही 'पोषण' मान लिया जाए। केवल गेहूं और चावल से कैलोरी तो मिल जाती है, पर संपूर्ण विकास नहीं होता। बढ़ते बच्चे, गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को प्रोटीन, आयरन, विटामिन और अन्य सूक्ष्म पोषक तत्त्व चाहिए, जो दाल, दूध, अंडे, फल और हरी पत्तेदार सब्जियों से मिलते हैं। पोषण केवल पेट की नहीं, थाली की गुणवत्ता की चिंता है। यदि भोजन में विविधता न हो, तो छिपी हुई भूख, यानी सूक्ष्म पोषक तत्त्वों की कमी बनी रहती है, जिसका असर बच्चों की सीखने और बढ़ने की क्षमता पर पड़ता है। खाद्य महंगाई ने इन चीजों को कई परिवारों की पहुंच से दूर कर दिया है। जब एक दिहाड़ी मजदूर की आमदनी बुनियादी राशन जुटाने में ही खप जाए, तो संतुलित आहार की गुंजाइश कहां बचती है?

इसके साथ ही पोषण अभियान, स्कूलों में मध्याह्न भोजन और आंगनबाड़ी सेवाओं के क्रियान्वयन की कमियां भी संकट को गहरा करती हैं। जिन आंगनबाड़ी केंद्रों पर नवजातों और माताओं को कुपोषण से निकालने की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है, वे अक्सर भवन, पेयजल, संसाधनों और कार्यकर्ताओं के कम मानदेय की समस्या से जूझते हैं। पोषण सामग्री की गुणवत्ता और वितरण को लेकर शिकायतें भी समय-समय पर सामने आती रही हैं। सार्वजनिक वितरण प्रणाली का जोर भी अब तक मुख्य रूप से गेहूं और चावल पर ही रहा है, जबकि जरूरत थाली में विविधता लाने की है। नीतिगत सुधार केवल फाइलों में नहीं हो सकते। इसके लिए योजनाओं की निगरानी को अंतिम छोर तक पारदर्शी बनाना होगा, ताकि हर लाभार्थी तक पूरा और गुणवत्तापूर्ण पोषण पहुंचे। क्षेत्रीय तुलना में तस्वीर और असहज करती है। श्रीलंका 53वें स्थान पर है और नेपाल व बांग्लादेश भी भारत से बेहतर स्थिति में हैं, जबकि चीन उन देशों में है, जिनका स्कोर 5 से कम है। पाकिस्तान 106वें स्थान पर और अफगानिस्तान भारत से पीछे हैं, पर किसी से बेहतर होना संतोष का आधार नहीं हो सकता। इससे साफ है कि भूख और कुपोषण से मुक्ति के लिए केवल जीडीपी की ऊंची विकास दर काफी नहीं, बल्कि सही प्राथमिकताएं और क्रियान्वयन भी जरूरी हैं।

बदलाव का जरिया बन सकेगी रामलीला मैदान की रैली

रामलीला मैदान पर पांच और रैलियां आयोजित कर चुके हैं। हर रैली में मोदी को उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया गया। लेकिन कुछ-एक राज्यों की सत्ता को छोड़ दें तो विपक्षी दलों की रैलियां 1977 की तरह कामयाब नहीं रहीं। हालांकि सरकार को अपने कुछ कदम जरूर पीछे खींचने पड़े। नरेंद्र मोदी के सत्ता में आए अभी एक साल भी पूरा नहीं हुआ था, जब 19 अप्रैल 2015 को कांग्रेस की अगुआई में विपक्षी दलों ने किसान-खेत मजदूर रैली आयोजित की थी। मोदी सरकार द्वारा लाए गए भूमि अधिग्रहण अध्यादेश के विरोध में आयोजित इस रैली के बाद सरकार को अपने कदम पीछे खींचने पड़े थे।

(उमेश चतुर्वेदी)

केंद्रीय सत्ता पर नरेंद्र मोदी के काबिज होने के बाद विपक्षी दल बदलाव के प्रतीक माने जाने वाले रामलीला मैदान पर पांच और रैलियां आयोजित कर चुके हैं। हर रैली में मोदी को उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया गया। लेकिन कुछ-एक राज्यों की सत्ता को छोड़ दें तो विपक्षी दलों की रैलियां 1977 की तरह कामयाब नहीं रहीं। सत्ता के खिलाफ विपक्षी दल जब भी रामलीला मैदान में रैली करते हैं, उनकी स्मृति में सात फरवरी 1977 की तारीख होती है। आपातकाल के बाद दिल्ली की उतरती ठंड के बीच जेपी के नाम से विख्यात जयप्रकाश नारायण की अगुआई में हुई रैली में ही सत्ता परिवर्तन के बीज पड़े थे। इसे संयोग ही कहेंगे कि करीब आधी सदी बाद इसी रामलीला मैदान में आयोजित रैली के किरदार बदले हुए थे। 1977 में जिस रैली के निशाने पर कांग्रेस थी, करीब पांच दशक बाद की रैली में कांग्रेस बदली हुई भूमिका में रही। इंदिरा के पोते राहुल गांधी की अगुआई में हुई 'वोट बचाओ, देश बचाओ' रैली में निशाने पर वह भारतीय जनता पार्टी रही, जो तब जेपी की अगुआई में इंदिरा के खिलाफ खड़ी थी। यह बताने की जरूरत नहीं कि इसके कुछ ही दिनों बाद हुए आम चुनावों में सर्वशक्तिमान मानी जाने वाली इंदिरा गांधी की सत्ता का शिराजा बिखर गया था। ऐसे में सवाल यह उठना लाजमी है कि क्या राहुल की अगुआई वाली रामलीला मैदान की रैली देश की सत्ता को बदलने में कामयाब हो पाएगी? सवाल यह भी है कि क्या मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार अपने पद से हटने के लिए मजबूर हो जाएंगे।



केंद्रीय सत्ता पर नरेंद्र मोदी के काबिज होने के बाद विपक्षी दल बदलाव के प्रतीक माने जाने वाले रामलीला मैदान पर पांच और रैलियां आयोजित कर चुके हैं। हर रैली में मोदी को उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया गया। लेकिन कुछ-एक राज्यों की सत्ता को छोड़ दें तो विपक्षी दलों की रैलियां 1977 की तरह कामयाब नहीं रहीं। हालांकि सरकार को अपने कुछ कदम जरूर पीछे खींचने पड़े। नरेंद्र मोदी के सत्ता में आए अभी एक साल भी पूरा नहीं हुआ था, जब 19 अप्रैल 2015 को कांग्रेस की अगुआई में विपक्षी दलों ने किसान-खेत मजदूर रैली आयोजित की थी। मोदी सरकार द्वारा लाए गए भूमि अधिग्रहण अध्यादेश के विरोध में आयोजित इस रैली के बाद सरकार को अपने कदम पीछे खींचने पड़े थे। कांग्रेस की ही अगुआई में विपक्षी दलों ने 14 दिसंबर 2019 को इसी रामलीला मैदान में भारत बचाओ रैली की थी। जिसका मकसद, देश की आर्थिक स्थिति, गिरते जीडीपी, बेरोजगारी और नागरिकता संशोधन कानून जैसे मुद्दों पर मोदी सरकार को घेरना रहा। इस रैली का असर यह हुआ कि नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ देश के कई हिस्से महीनों तक आंदोलनरत रहे।

कांग्रेस की अगुआई में विपक्षी दलों ने रामलीला मैदान में चार सितंबर 2022 को महंगाई पर हल्ला बोल रैली के जरिए मोदी सरकार को घेरने की कोशिश की। इस रैली में बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी और आवश्यक वस्तुओं पर जीएसटी लगाने का विरोध किया गया। 'वोट बचाओ, देश बचाओ' रैली में राहुल गांधी के भाषण की खूब चर्चा है। कुछ इसी तरह इस रैली में भी राहुल गांधी ने जो कहा था, उसे लेकर कई दिनों तक चर्चा और विमर्श जारी रहा। पिछले आम चुनाव के ठीक पहले 31 मार्च 2024 को फिर कांग्रेस ने विपक्षी दलों की लोकतंत्र बचाओ महारैली आयोजित की। इस रैली का मकसद शराब घोटाले में दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और भूमि घोटाले में झारखंड के तत्कालीन मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की गिरफ्तारी का विरोध करना रहा। इस रैली मोदी सरकार के विरोध में गठित विपक्षी दलों के इंडिया गठबंधन की ताकत दिखाना भी रहा।

मोदी सरकार के गठन के बाद कांग्रेस की अगुआई में आयोजित हुई रामलीला मैदान की रैलियों के परिणामों पर नजर डालें तो देखेंगे कि 2024 की रैली के अलावा किसी दूसरी रैली का मोदी सरकार की सेहत पर खास असर नहीं दिखा। 2024 के आम चुनावों में बीजेपी का बहुमत के आंकड़े से दूर होने के पीछे इस रैली के असर को देखा-समझा जा सकता है। फिर भी कहा जा सकता है कि इस रैली ने मोदी के अजेयता के मिथ को चोट जरूर पहुंचाई। यह बात और है कि इससे बीजेपी निराश नहीं हुई। अगर वह निराश हुई होती तो वह बिहार, असम, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र के चुनाव नहीं जीत सकती थी। विपक्ष चाहे लाख दावा करे कि इन राज्यों में एसआईआर के बहाने वोटों की चोरी हुई, लेकिन इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि मोदी की अगुआई में बीजेपी निराशा झाड़कर उठ खड़ी होती रही और चुनाव-दर-चुनाव सफलताएं हासिल करती रही।

राहुल गांधी के निशाने पर इन दिनों चार लोग हैं और अपने हर भाषण और प्रेस कांफ्रेंस में वह अशोभन ढंग से इन नामों पर हमला करते रहते हैं। प्रधानमंत्री मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, संघ प्रमुख मोहन भागवत और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार का नाम लेकर राहुल टिप्पणियां कर रहे हैं। रामलीला मैदान में भी उन्होंने अशोभन तरीके से नाम लिए, लेकिन लगे हाथों यह कहने से भी नहीं चूके कि वे किसी से नफरत नहीं करते। राहुल का यह रूप दिलचस्प ही कहा जाएगा कि नफरत नहीं भी करते, लेकिन उनके शब्दों में नकारात्मकता ठीक से झलकती है। कांग्रेस के रणनीतिकार मानें या न मानें, लेकिन अमर्यादित तरीके से निशाना बनाने के चलते राहुल के शब्दों को आम जन गंभीरता से नहीं ले पाता। लोकसभा के चुनाव में अभी दो साल का वक्त है, लेकिन अगले कुछ महीनों में उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, गोवा और मणिपुर में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। उत्तर प्रदेश को छोड़कर हर राज्य में कांग्रेस प्रमुख प्रतिद्वंद्वी है। पंजाब में उसका मुकाबला विपक्षी खेमे के ही आम आदमी पार्टी से है। यहां उसके लिए कशमकश की स्थिति है। उत्तर प्रदेश में वह समाजवादी पार्टी की पिछलग्गू है। हालांकि वह कोशिश कर रही है कि पिछलग्गू का ठप्पा उसके दामन से साफ हो सके। बाकी तीन राज्यों में वह बीजेपी के बरक्स मुकाबले में है। रामलीला मैदान की रैली का घोषित उद्देश्य भले ही मोदी, शाह, और भागवत का विरोध एवं ज्ञानेश का इस्तीफा लेना हो। लेकिन अघोषित मकसद इन राज्यों के चुनावी समर में बीजेपी को मात देना है। इस दिशा में अभी से माहौल बनाना है। मोदी के उभार के बाद रामलीला मैदान में आयोजित अतीत की रैलियों और एक नवंबर की रैली में एक अंतर साफ दिखता है। पहले ममता समेत कुछ विपक्षी दल राहुल को नेता मानने से कतराते थे। लेकिन इस रैली में एक तरह से राहुल की अगुआई स्वीकार कर ली गई है।



लाल लिपस्टिक लगाई हुई नज़र आती है ये अनोखी मछली, तैरती नहीं बल्कि चलती है

आपने अब तक कई तरह की मछलियां देखी होगी लेकिन ये मछली ज़रा हटकर है। इसे देखकर ऐसा लगता है मानों इसने लिपस्टिक लगा रखी है। जी हां, इस मछली के होंठ एकदम लाल होते हैं। इसे रेड लिप्ड बैट फिश के नाम से जाना जाता है। ये मछलियां गैलापागोस आईलैंड और पेरू में पाई जाती है। इतना ही नहीं, इसकी एक खासीयत यह भी है कि ये अन्य मछलियों की तरह तैरती नहीं बल्कि चलती है। ये अपने पेक्टोरल पंखों से समुद्र तल पर 'चलते' हैं। एंगलरफिश के परिवार से होने के कारण, रेड-लिप्ड बैटफिश के सिर पर एक इलिसियम यानी एक छोटा सिंग जैसा होता है जिसका उपयोग वे अपने शिकार, जैसे छोटी मछली, झींगा, कीड़े और केकड़ों को आकर्षित करने के लिए करते हैं।



खूबसूरत लेकिन बेहद खूंखार हैं ये पक्षी, सांपों का बेरहमी से करते हैं शिकार

किसी पक्षी का नाम 'सेक्रेटरी बर्ड' हो, तो सुनने में थोड़ा अजीब लगेगा ही। ये पक्षी बेहद खूबसूरत हैं जो कि दुनिया के सबसे लंबे रैप्टर पक्षी हैं। अफ्रीका में पाए जाने वाले ये पक्षी जितने सुंदर हैं, उससे कहीं ज्यादा खूंखार भी हैं। ये पक्षी उन इलाकों में ज्यादा पाए जाते हैं, जहां सांप ज्यादा होते हैं। ये वास्तव में शिकारी पक्षी हैं, जो सांप का बेरहमी से शिकार करते हैं। सांपों को मारने का इनका तरीका आपको हैरान कर देगा। तरीका ऐसा है कि आपको सांपों पर ही दया आ जाए। ये पक्षी सांप के सिर पर इतनी तेजी से लात मारते हैं कि सांप पलक झपकते ही ढेर हो जाते हैं।

सारस और बाज की तरह है शरीर

ये आधे सारस और आधे बाज की तरह दिखते हैं। जब ये उड़ान भरते हैं, तो सारस पक्षी की तरह दिखते हें और जमीन पर बाज की तरह दिखाई देते हैं। सिर पर उनके छतरी जैसी कलंगी भी नज़र आती है। इन पक्षियों की लंबाई 35 से 54 इंच के बीच होती है।

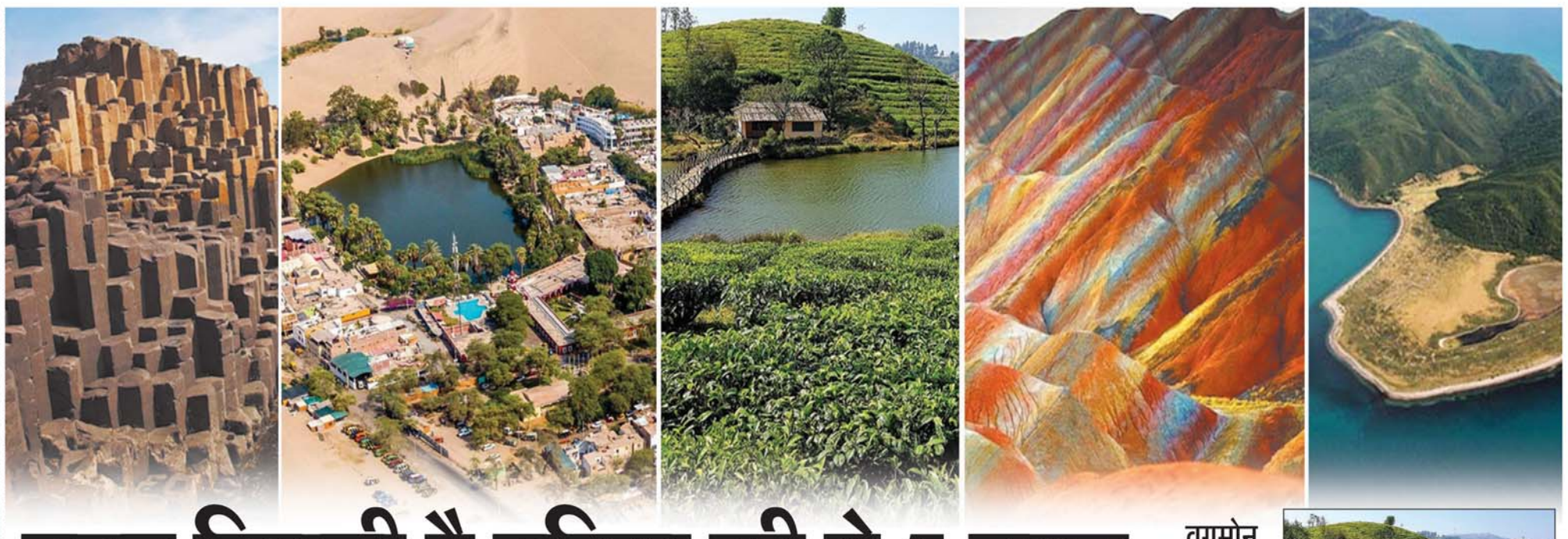

बहुत निराली है दुनिया की ये 5 जगह, इन्हें देखकर हर कोई हो जाता है हैरान

इस दुनिया में कई ऐसे स्थान मौजूद हैं, जहां घूमने फिरने के लिए भरी संख्या में पर्यटक पहुंचते हैं। कोई स्थान प्राकृतिक सुंदरता के लिए पहचाना जाता है, तो किसी को अपने इतिहास और संस्कृति के चलते पहचाना जाता है। हर जगह की अपनी कोई ना कोई विशेषता है, जो उसे बाकी जगहों से अलग बनाती है। अपने देश दुनिया के अलग-अलग हिस्से में मौजूद कई स्थानों के बारे में सुना होगा। इन जगहों का दीदार भी कुछ लोगों ने किया ही होगा। कुछ स्थान तो ऐसे हैं जो बहुत प्रसिद्ध है और अक्सर लोग वहां पहुंचते हैं। वहीं कुछ स्थान ऐसे भी हैं, जो बहुत ही अनोखे हैं और लोग इनसे अनजान हैं।

रेनबो माउंटेन

यह बहुत ही खूबसूरत जगह है जो चीज में मौजूद है। यह पर्वत है जो पूरी तरह से इंद्रधनुष के रंगों की तरह दिखाई देता है। उत्तर पश्चिम चीन में मौजूद यह जगह गांसू प्रांत के डानक्सिया जियोपार्क में मौजूद है। इस स्थान को देखने पर ऐसा लगेगा जैसे आप किसी किताब में छपा होगा चित्र देख रहे हैं।



हुआचिना रेगिस्तान का ओएसिस

पेरू में मौजूद यह रेगिस्तान देखकर आप हैरान हो जाएंगे। यह कहने को रेगिस्तान है लेकिन यहां मौजूद ओएसिस गांव



वगमोन

यह भारत के ही केरल में मौजूद एक बहुत ही शांत और खूबसूरत स्थान है। यहां की प्राकृतिक सुंदरता आपका दिल जीत लेगी। अगर आपको भागदौड़ भरी जिंदगी से सुकून चाहिए तो यह जगह बिल्कुल बेस्ट रहेगी। दूर-दूर तक पहले पहाड़ देवदार के जंगल खूबसूरत झरने आपको प्रकृति के करीब के जाएंगे।

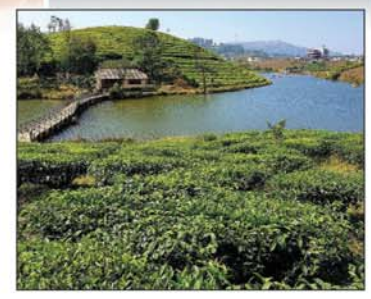

कपिति द्वीप



यह न्यूजीलैंड में मौजूद एक बहुत ही सुंदर जगह है। यहां पर सुंदर और प्राचीन वन्य जीव का दीदार किया जा सकता है। हालांकि, वह लोग भाग्यशाली ही होते हैं जिन्हें जानवरों और पौधों को करीब से देखने का मौका मिलता है।

बहुत ही अद्भुत है। यहां आपको भोजनालय, होटल और स्ट्रीट वेंडर की विविधताएं देखने को मिलेगी। यह चारों तरफ से रेत के टीलों से घिरा हुआ है। यह सेंड बोर्डिंग टूर के लिए काफी प्रसिद्ध स्थान है।

जॉइंट्स कॉजवे

यह उत्तरी आयरलैंड में मौजूद एक तटीय सड़क है जो अपने आप में बहुत ही अनोखी है। इसे यूके के चौथे अजूबे के रूप में पहचाना जाता है। ये जगह किसी को भी आसानी से लुभा लेती है।



टकाचोरः चमकीली चीजों से घोंसला सजाता है यह पक्षी



दुनिया में विभिन्न प्रकार के जीव हैं जो अपनी अचम्भित कर देने वाली विशेषताओं के लिए जाने जाते हैं। उन्हीं में से एक है 'रूफस ट्रीपी' जो कौवे परिवार का सदस्य है। यह आमतौर पर भारत के विभिन्न क्षेत्रों के अलावा पाकिस्तान और श्रीलंका में पाया जाता है। देश में इन्हें टकाचोर नाम से जाना जाता है। इनका यह नाम चमकीले चीजें उठाकर ले जाने की वजह से पड़ी है। टकाचोर भारतीय उपमहाद्वीप में पाया जाने वाला कौवे के परिवार का एक बेहद चालाक, सुंदर और बुद्धिमान पक्षी है। वैज्ञानिक भाषा में इसे डेंड्रोसिटा वागाबुंडा कहा जाता है। हिंदी में इसे महातल या महाळत भी कहते हैं।

'टकाचोर' नाम क्यों पड़ा

मराठी और कुछ स्थानीय भाषाओं में 'टका' का मतलब सिक्का या धन होता है। इस पक्षी की एक आदत होती है कि इसे चमकीली चीजें जैसे कि सिक्के, गहने या कांच के टुकड़े बहुत पसंद आते हैं। यह अक्सर इंसानी बस्तियों के पास से ऐसी चमकीली चीजें उठाकर अपने घोंसले में छुपा देता है, इसी वजह से इसका नाम टकाचोर पड़ा है।

बाघ का डेंटिस्ट

इस पक्षी की सबसे हैरान करने वाली खूबी इसका शिकारियों के साथ तालमेल है। इसे 'बाघ का डेंटिस्ट' या 'टाइगर टूथपिक' भी कहा जाता है। यह बिना किसी डर के बाघ या तेंदुए जैसे बड़े शिकारियों के मुंह के पास बैठ जाता है और उनके दांतों में फंसे हुए मांस के टुकड़ों को निकाल कर खा जाता है। इससे बाघ के दांत साफ हो जाते हैं और टकाचोर को आसानी से पेटभर भोजन मिल जाता है।

रूप-रंग और शारीरिक बनावट

आकार: यह कौवे से थोड़ा छोटा और सडपातळ (स्लिम) होता है। इसकी कुल लंबाई लगभग 45 से 50 सेंटीमीटर होती है, जिसमें इसकी लंबी शेपटी (पूंछ) भी शामिल है।
रंग: इसका सिर, गर्दन और छाती का हिस्सा गहरा काला या गहरा भूरा होता है। पीठ और पेट का हिस्सा हल्का लाल-तपकिरी (नारंगी-भूरा) होता है। इसके पंखों पर काले और सफेद रंग की खूबसूरत पट्टियां होती हैं।
चोंच और आंखें: इसकी चोंच काफी मजबूत और आगे से थोड़ी मुड़ी हुई (हुक जैसी) होती है, जो मांस को निकालने और फल खाने में मदद करती है। इसकी आंखें चमकीली लाल-भूरी होती हैं।

स्वभाव और आवास

यह एक बेहद सामाजिक, चंचल और सर्वभक्षी पक्षी है। यह कीड़े-मकोड़े, फल, बीज, छोटे सरीसृप (छिपकली आदि) और दूसरे पक्षियों के अंडे तक खा जाता है। यह खुले जंगलों, बागों, खेतों और शहरी पार्कों में आसानी से देखने को मिल जाता है। रणथंभौर और केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान जैसे जंगलों में यह पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र रहता है। इसकी आवाज काफी तेज और अलग-अलग प्रकार की (संगीतमय और तीखी दोनों) होती है।

आकर्षक है इनके रंगों का मिश्रण

नारंगी, श्वेत और काले रंगों का अनोखा मिश्रण इन्हें आकर्षक बनाता है। ये मुख्यतः वृक्षवासी हैं और जंगलों में रहना पसंद करते हैं। ये शहरी पर्यावरण के साथ भी ढल चुके हैं परंतु कौवों की तुलना में ये शहरों में कम पाए जाते हैं।

जरूरत के अनुसार बदल सकते हैं ध्वनि

टकाचोर की पूंछ तक की लंबाई 45 से 55 सेमी तक होती है। नर और मादा में बहुत अल्प अंतर होते हैं। एक टकाचोर 12 से 15 साल तक ही जीवित रहता है। इनकी बोली में भिन्न प्रकार की ध्वनि और प्रबलता होती है जो उनकी जरूरत के अनुसार कभी अत्यधिक मधुर या अत्यधिक प्रबल हो सकती है।

किसानों के लिए फायदेमंद

किसानों के लिए टकाचोर बहुत फायदेमंद होते हैं। ये फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले कीड़ों को चट कर जाते हैं। ये बाघों के दांतों में फंसे मांस के टुकड़े निकाल कर भी भोजन करते हैं।



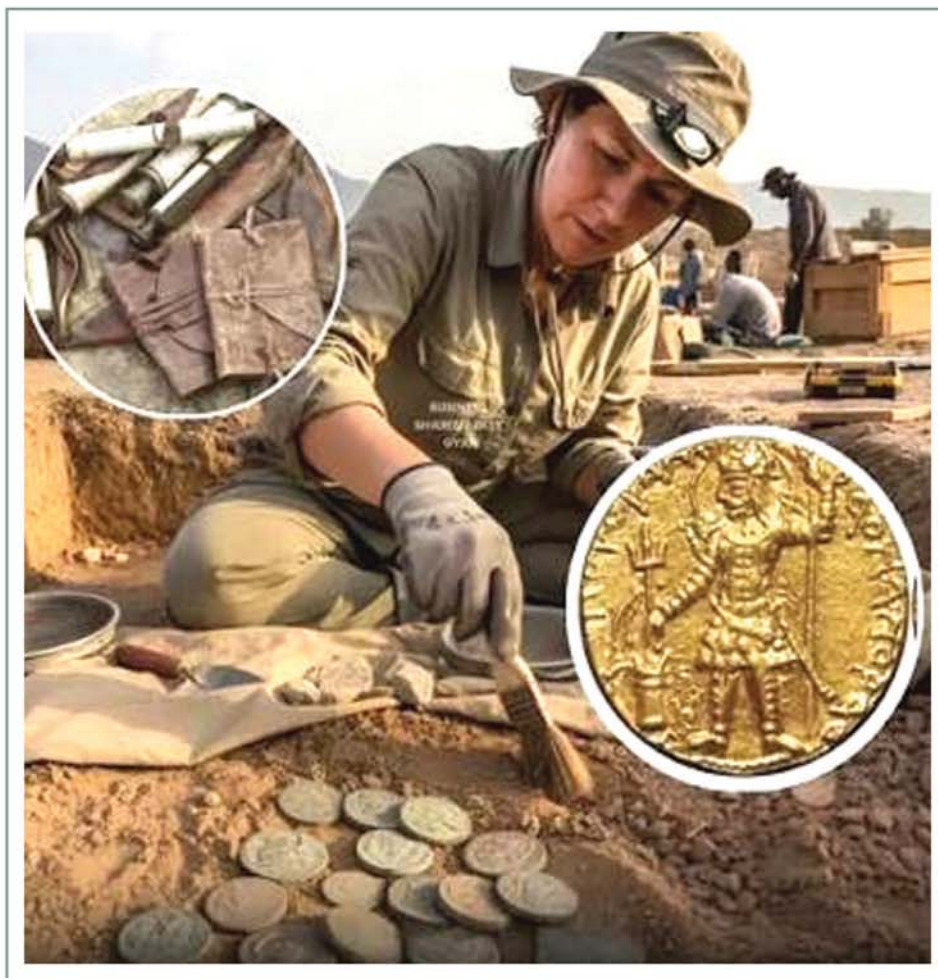

इस बौद्ध मंदिर में मिला रहस्यमयी खजाना कितने साल है पुराना

लोगों के मुंह से कई बार आपने ऐसा सुना होगा कि उन्हें 'आज रात में एक सपना आया है, जिसमें उन्हें धरती के अंदर से ढेर सारा खजाना मिला है।' लोगों के मुंह से इस तरह की बातों को सुनकर अक्सर हम सोचते हैं कि काश ऐसा सच में होता। शायद आपके साथ ऐसा न हुआ है, लेकिन कई बार पुरातत्वविदों के साथ इस तरह की चीजें हुई हैं। उन्हें धरती में समाए कई तरह के खजाने मिले हैं। दरअसल, आर्कियोलॉजिस्ट्स को पाकिस्तान में 2000 साल पुराने सिक्कों धरती के अंदर से मिले हैं, जो एक हैरान करने वाली घटना है। यह सिक्के पाकिस्तान में स्थित प्राचीन स्थल मोहनजोदड़ो पर बने एक बौद्ध मंदिर के खंडहरों में मिला है, जिसे देखकर हर कोई हैरान हो गया है।

सिक्कों का मिला खजाना

खबरों के मुताबिक, हाल ही में पाकिस्तान के एक प्राचीन बौद्ध मंदिर से से 2000 साल पुराने सिक्कों का खजाना मिला है। यह खजाना बौद्ध स्तूप के खंडहरों के नीचे से मिला है। लाइवसाइंस की रिपोर्ट के मुताबिक, पुरातत्वविद् को यह खजाना दक्षिण-पूर्व पाकिस्तान में स्थित प्राचीन स्थल मोहनजोदड़ो पर बने एक बौद्ध मंदिर के खंडहर से मिला है, जो लगभग 2600 ईसा पूर्व बना था।

कुषाण काल का है खजाना

मोहनजोदड़ो के इस बौद्ध मंदिर में पुरातत्वविद को खुदाई के दौरान लगभग 5.5 किलोग्राम के तांबे के सिक्के मिले हैं, जिसका रंग हरा है। इन सिक्कों की संख्या लगभग 1000 से 1500 के बीच बताई जा रही है। इन सिक्कों पर एक खड़ी आकृति बनी हुई है। शोधकर्ताओं का कहना है कि यह खजाना कुषाण राजाओं की हो सकती है। दावा किया जा रहा है कि यह खजाना कुषाण काल का है। बता दें कि कुषाण काल में बौद्ध धर्म का काफी प्रसार हुआ था। आर्कियोलॉजिस्ट का कहना है कि खंडहरों पर स्तूप का निर्माण लगभग 1600 साल बाद किया गया था। अब इन सिस्कों को लेबोरेटरी ले जाया गया है, यहां इसे सावधानीपूर्वक साफ किया जाएगा।



अन्नकूट : 21 क्विंटल मिठाइयों से सजा बाबा विश्वनाथ का दरबार

- वाराणसी में महादेव को लगा छप्पन भोग, बांटा गया प्रसाद
- गर्भगृह में विराजे बाबा, विधि-विधान से उतारी गई आरती
- श्री सत्यनारायण मंदिर में भगवान को लगाया अन्नकूट का भोग
- मेवों की माला से सजे बाबा, रजत प्रतिमा की शोभायात्रा ने मोहा
- गोवर्धन पर्व पर मंदिरों में उमड़ी श्रद्धा, अन्नकूट प्रसाद का वितरण

दीपावली के उल्लास के बाद अन्नकूट पर्व पर मणि मंदिर में 151 क्विंटल अन्न से सजा अन्नकूट,भोलेनाथ ने दिया दर्शन

एजेंसी | वाराणसी

दीपावली के उल्लास के बाद अन्नकूट पर्व पर श्री काशी विश्वनाथ धाम में भक्ति और श्रद्धा का अनूठा नजारा देखने को मिला। बाबा विश्वनाथ का दरबार 21 क्विंटल तरह-तरह की मिठाइयों से सजाया गया। बूंदी के लड्डू, मेवे के लड्डू और पारंपरिक मिष्ठानों से भगवान श्री विश्वेश्वर महादेव का भव्य श्रृंगार किया गया। फूलों, दीपों और सुगंधित धूप से सजे धाम में हर-हर महादेव के जयघोष गूंजते रहे। श्रद्धालुओं ने बाबा के दरबार में मत्था टेककर सुख-समृद्धि, स्वास्थ्य और शांति की कामना की। अन्नकूट पर्व पर महादेव के दर्शन के साथ ही परंपरागत धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन भी हुआ। भगवान श्री विश्वनाथ, माता गौरी और गणेश जी की पंचबदन रजत चल प्रतिमाओं की भव्य शोभायात्रा टेढ़ीनीम स्थित महंत परिवार के आवास से निकाली गई। शहनाई की मधुर धुन, डमरू की थाप और हर-हर महादेव के उद्घोष के बीच शोभायात्रा मंदिर पहुंची। इसके बाद तीनों रजत प्रतिमाओं को विधि-विधान से गर्भगृह में विराजमान कराया गया।

मेवों की माला से सजे बाबा

काशी में बाबा विश्वनाथ की सवारी निकले तो गलियां केवल रास्ता नहीं रह जातीं, बल्कि आस्था का जीवंत उत्सव बन जाती हैं। अन्नकूट पर्व पर मंगलवार को ऐसा ही नजारा देखने को मिला। टेढ़ीनीम स्थित श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर के महंत आवास से बाबा की चल रजत प्रतिमा की शोभायात्रा निकली तो पूरा इलाका शिवमय हो उठा। काजू, किशमिश, बादाम, लौंग और इलायची की मालाओं से सजे बाबा का दिव्य स्वरूप श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र रहा।

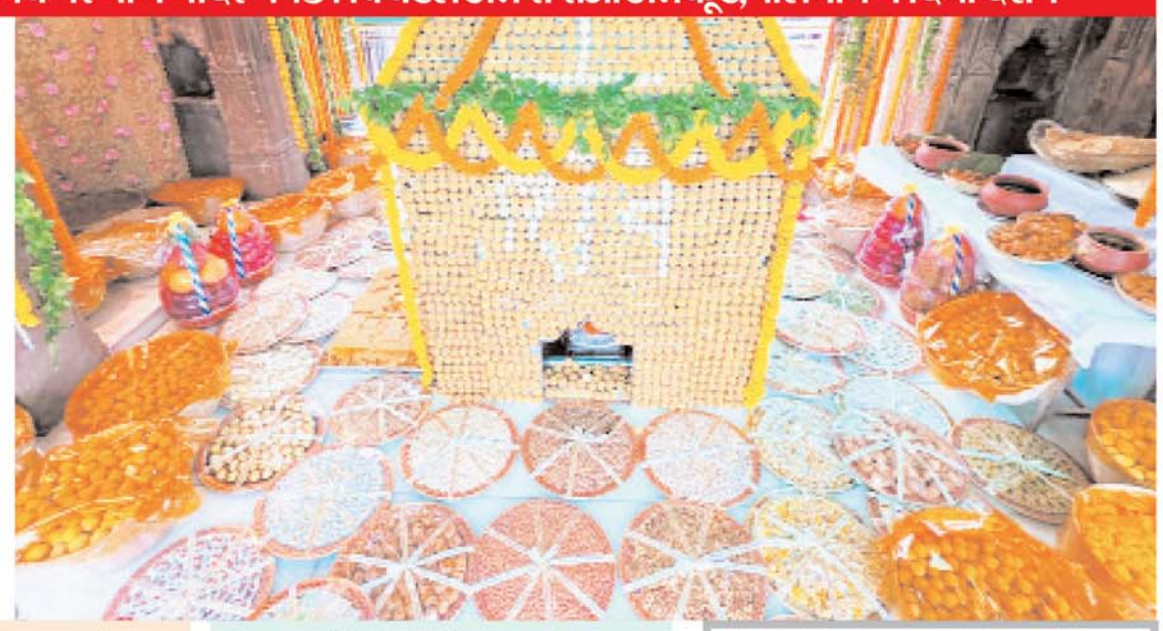

लगे बाबा विश्वनाथ के जयकारे

गर्भगृह में भगवान विश्वनाथ की मध्याह्न भोग आरती संपन्न हुई। इस दौरान बाबा को विभिन्न प्रकार के मिष्ठानों और पकवानों का भोग अर्पित किया गया। मंदिर परिसर में सुबह से ही उत्सव जैसा माहौल रहा। दर्शन-पूजन के लिए पहुंचे श्रद्धालु अन्नकूट महोत्सव में शामिल होकर अभिभूत नजर आए। भोग आरती के बाद श्रद्धालुओं के बीच प्रसाद वितरण किया गया। भक्तों ने प्रसाद ग्रहण कर इसे बाबा का आशीर्वाद माना। मंदिर परिसर में श्रद्धा और उल्लास का वातावरण बना रहा।

सामूहिक सहभागिता का संदेश

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को मनाया जाने वाला अन्नकूट पर्व भगवान श्रीकृष्ण की ओर से गोवर्धन पर्वत की पूजा की परंपरा से जुड़ा है। यह पर्व प्रकृति, अन्न और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का संदेश देता है। अन्न की महत्ता, उसकी सुरक्षा और जरूरतमंदों के साथ भोजन साझा करने की भावना भी इस पर्व से जुड़ी है। काशी विश्वनाथ धाम में आयोजित महोत्सव ने धार्मिक परंपरा के साथ सामाजिक समरसता और सामूहिक सहभागिता का संदेश दिया।

बादाम की मालाओं से हुआ श्रृंगार

अन्नकूट पर्व पर बाबा की चल रजत प्रतिमा का विशेष श्रृंगार किया गया। काजू, किशमिश, बादाम, लौंग और इलायची की मालाओं से बाबा को सजाया गया। मेवों से तैयार इन मालाओं के बीच रजत प्रतिमा का स्वरूप देखते ही बन रहा था। दर्शन करने पहुंचे श्रद्धालु बाबा के इस अनूठे श्रृंगार को अपलक निहारते रहे। श्रृंगार में काशी की पारंपरिक धार्मिक विरासत और भक्तों की अनन्य श्रद्धा की झलक दिखाई दी।

कान्हा की नगरी मथुरा में गोवर्धन पूजा, विदेशी भी लगा रहे हाजिरी

सिर पर प्रसाद की टोकरियां लेकर गिरिराज को अर्पित कर लगा रहे भोग

इधर, मथुरा में गोवर्धन पूजा का पर्व श्रद्धा और भक्ति भाव के साथ मनाया जा रहा है। इस पावन अवसर पर गिरिराज धाम में सुबह से ही श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ रही है। देश के कोने-कोने से ही नहीं, बल्कि विदेशों से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु गोवर्धन पहुंच रहे हैं। भगवान श्रीकृष्ण की लीलास्थली में गिरिराज महाराज के दर्शन कर विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर रहे हैं। विदेशी भक्त सिर पर प्रसाद की टोकरियों को लेकर गिरिराज को भोग अर्पित कर रहे हैं। गोवर्धन पूजा को लेकर पूरे धाम में भक्तिमय वातावरण बना हुआ है। श्रद्धालु गिरिराज महाराज के समक्ष पूजा कर परिवार की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना कर रहे हैं।

जयकारों से गूंज रहा अंचल

वहीं बड़ी संख्या में भक्त गिरिराज पर्वत की परिकमा कर पुण्य लाभ अर्जित कर रहे हैं। मंदिरों और प्रमुख धार्मिक स्थलों पर लगातार श्रद्धालुओं का आवागमन बना हुआ है। गिरिराज महाराज के जयकारों से समूचा धाम गुंजायमान हो रहा है। गोवर्धन पूजा के अवसर पर उमड़ रही श्रद्धालुओं की भीड़ ब्रज की धार्मिक और आध्यात्मिक महिमा को दर्शा रही है।

रामभक्ति की धुन ने मोहा मन

शोभायात्रा की रवानगी से पहले महंत आवास पर 36वीं वाहिनी पीएसी के बैंड ने अपनी प्रस्तुतियों से माहौल को भक्तिमय बना दिया। रामनगर से आए बैंड का नेतृत्व विनोद कुमार सिंह ने किया। बैंड ने जैसे ही ओम नमः शिवाय की धुन छेड़ी, पूरा परिसर शिव आराधना में डूब गया। इसके बाद श्री राम जानकी बैठे हैं मेरे सीने में की धुन सुनाई दी तो शिवभक्ति के बीच रामभक्ति का रंग भी घुल गया।

विश्वनाथ गली में थम गए कदम

बैंड की धुन और मृदंगम की थाप के साथ बाबा की रजत प्रतिमा की शोभायात्रा महंत आवास से निकली। आगे-आगे पीएसी बैंड और उसके पीछे बाबा की सवारी के साथ श्रद्धालुओं का समूह चल रहा था। जैसे ही शोभायात्रा विश्वनाथ गली में पहुंची, वहां का दृश्य भावपूर्ण हो गया। दुकानों पर बैठे दुकानदार, खरीदारी कर रहे लोग और राह चलते श्रद्धालु बाबा की एक झलक पाने के लिए ठहर गए।

पीओके में बुनियादी सुविधाओं की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन तेज, मुनीर को लिखा पत्र

एजेंसी | क्वेटा

पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में अपने हक और बुनियादी सुविधाओं की मांग को लेकर जारी विरोध प्रदर्शन तेज हो रहे हैं। बिगड़ते हालात के बीच जम्मू कश्मीर जॉइंट अवामी एक्शन कमेटी ने सीधे पाकिस्तान के सेना प्रमुख असीम मुनीर को पत्र लिखकर जवाब मांगा है। संगठन ने सैन्य कार्रवाई तुरंत रोकने, इलाके से सुरक्षा बलों को हटाने और प्रदर्शन के दौरान मारे गए लोगों को न्याय देने की मांग की है। कमेटी का दावा है कि जून 2026 में आंदोलन शुरू होने के बाद से अब तक 150 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। कमेटी ने पाकिस्तानी सुरक्षा बलों पर प्रदर्शनकारियों के खिलाफ जरूरत से ज्यादा ताकत इस्तेमाल करने का



आरोप लगाया है। उनका कहना है कि शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे लोगों पर भारी हथियारों और ड्रोन तक का इस्तेमाल किया गया। संगठन ने पाकिस्तान के राजनीतिक और सैन्य नेतृत्व से अपील की है कि ताकत के इस्तेमाल के बजाय बातचीत का रास्ता अपनाया जाए। जानकारों के मुताबिक कमेटी ने चेतावनी दी है कि अगर लोगों की मांगों को दबाने के लिए कार्रवाई जारी रही।

सोशल मीडिया पर छिड़ी बहस, फॉलोअर्स ने दी नसीहत

बेटी के साथ 'इश्क' का डायलॉग बोलकर फंस गईं हसीन जहां

एजेंसी | अमरोहा

भारतीय क्रिकेटर मोहम्मद शमी की पत्नी हसीन जहां एक बार फिर सोशल मीडिया पर चर्चा में हैं। इस बार वजह उनकी बेटी आयरा के साथ बनाई गई एक रील है। इसमें मां-बेटी के बीच इश्क, जन्नत और जहन्नुम को लेकर संवाद दिखाया गया है। फेसबुक पर वीडियो पोस्ट करने के कुछ ही घंटों में हजारों लोगों ने इसे पसंद किया, लेकिन इसके संवाद को लेकर सोशल मीडिया पर प्रतिक्रियाएं भी सामने आने लगीं। कई यूजर्स ने हसीन जहां को ट्रोल करते हुए बेटी को विवादों से दूर रखने की नसीहत दी। वायरल वीडियो में बेटी आयरा अपनी मां से कहती हैं, बताइए खातून, क्या मसला है आपका, इस पर हसीन



जहां जवाब देती हैं, मुझे इश्क हुआ है। बेटी कहती हैं, अस्तगफिरुल्लाह, अस्तगफिरुल्लाह... जहन्नुम में जाना चाहती हैं आप। इस पर हसीन जहां कहती हैं, मौलवी साहब, आपसे हुआ है। इसके जवाब में आयरा बोलती हैं-माशाल्लाह, माशाल्लाह... सीधा जन्नत में जाना चाहती हैं आप। संवाद के बाद बेटी अपनी मां को प्यार भी करती नजर आती हैं। फेसबुक पर पोस्ट किए गए इस वीडियो को कुछ ही घंटों में 4.6 हजार लोगों ने लाइक किया।

92 लोगों ने कमेंट किए

वहीं, 92 लोगों ने कमेंट किए और 32 लोगों ने इसे आगे साझा किया। वीडियो में बेटी के साथ इस्तेमाल किए गए संवाद को लेकर कुछ यूजर्स ने नाराजगी जताई। कुछ लोगों ने इसे सामान्य मनोरंजन बताते हुए हसीन जहां का समर्थन किया, जबकि आलोचना करने वालों ने सवाल उठाए कि बच्चों को इस तरह के कंटेंट का हिस्सा क्यों बनाया जा रहा है। कई फॉलोअर्स ने बेटी को इस तरह की चर्चाओं और विवादों से दूर रखने की सलाह दी।

चौबारी मेले की तैयारियां जोरों पर, सजने लगी दुकान

बरेली। रामगंगा नदी के किनारे लगने वाले पारंपरिक चौबारी मेले की तैयारियां जोरों पर हैं। मेले में मनोरंजन के लिए झूले लगने लगे हैं। वहीं दुकानदारों ने भी अपनी दुकानें सजाना शुरू कर दिया है। 20 से 28 नवंबर तक लगने वाले मेले को लेकर मेला स्थल पर चहल-पहल बढ़ने लगी है। कार्तिक पूर्णिमा पर 24 नवंबर को मुख्य स्नान होगा। मेले में अब धीरे-धीरे अस्थायी बाजार का स्वरूप दिखाई देने लगा है। बच्चों के मनोरंजन के लिए कई प्रकार के झूले लगाने का काम शुरू हो गया है। वहीं घरेलू सामान, खिलौने, खानपान और रोजमर्रा की जरूरतों से जुड़ी दुकानें भी तैयार हो रही हैं। रिपोर्ट के मुताबिक आने वाले दिनों में मेले में दुकानों और मनोरंजन के साधनों की संख्या बढ़ेगी। ग्रामीण क्षेत्रों से भी बड़ी संख्या में लोगों के पहुंचने की संभावना है। चौबारी मेले का पशु बाजार इसकी खास पहचान है। यहां घोड़ों की खरीद-फरोख्त के लिए यूपी के कई जिलों के अलावा दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा और पंजाब से व्यापारी यहां आते हैं।

अखिलेश की स्थिति 'न अली के रहे न बजरंगबली के' जैसी हो गई

मंत्री ओपी राजभर का सपा मुखिया पर करार तंज, कहा



एजेंसी | अंबेडकरनगर

अंबेडकरनगर में मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने मंगलवार को सर्किट हाउस में सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव पर जमकर निशाना साधा। प्राइमरी स्कूलों के विलय, राम मंदिर दर्शन और सनातन धर्म के मुद्दे पर उन्होंने सपा नेतृत्व को घेरा। अखिलेश पर तंज कसते हुए राजभर ने कहा कि उनकी स्थिति न अली के रहे, न बजरंगबली के जैसी हो गई है। राजभर ने कहा कि अखिलेश यादव पांच साल तक प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे, लेकिन गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए उन्होंने कुछ नहीं किया। सपा सरकार के दौरान बच्चे टाट-पट्टी पर बैठकर पढ़ाई करते थे, जबकि योगी सरकार में स्कूलों में बेंच और डेस्क की व्यवस्था की गई है। अभिभावकों के खातों में भी सहायता राशि भेजी जा रही है। उन्होंने अटल आवासीय विद्यालयों का जिक्र करते हुए कहा कि यहां गरीब और मजदूर परिवारों के बच्चे रहकर डॉक्टर और इंजीनियर बनने की तैयारी कर रहे हैं।

काशी-मथुरा की तारीख भी बताएं

राम मंदिर दर्शन को लेकर भी राजभर ने अखिलेश पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि अखिलेश के अयोध्या जाने की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। अगर वह अयोध्या जा रहे हैं तो उन्हें मथुरा और काशी विश्वनाथ जाने की तारीखों का भी एलान करना चाहिए।

कारसेवकों के बयान पर भी निशाना

राजभर ने सनातन धर्म और कारसेवकों पर गोली चलवाने को लेकर सपा नेता सनातन पांडेय के बयान का भी मुद्दा उठाया। शिवपाल यादव की ओर से अनुशासन को लेकर दी गई चेतावनी पर उन्होंने सपा के अंदर नेतृत्व को लेकर सवाल खड़े किए। उन्होंने पूछा कि समाजवादी पार्टी में असली नेतृत्व अखिलेश यादव का है या शिवपाल यादव का।

मुंबई के मालवणी में पटाखे की दुकान में आग, किशोर की जलने से मौत

मुंबई। मुंबई के मालवणी में पटाखे की दुकान में आग लगने से एक 16 साल के किशोर की मौत हो गई। आग लगने के बाद दुकान का स्लैब गिर गया था। यह हादसा सोमवार रात मलाड वेस्ट में अब्दुल हमीद मार्ग पर गेट नंबर 8 के पास ग्राउंड-फ्लोर पर एक दुकान में हुई। आग लगने की सूचना मिलने के बाद फायर ब्रिगेड की छह गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और आग बुझाने का काम शुरू किया। बीएमसी की मुंबई फायर ब्रिगेड के मुताबिक, आग दुकान के अंदर पटाखों, बिजली के तारों और बिजली के इंस्टॉलेशन तक ही सीमित थी।

आध्यात्मिक गुरु की ज़ेनज़ी को आंदोलनों से सतर्क रहने की सलाह

समस्याओं पर आवाज उठाएं, लेकिन राष्ट्र-विरोधी तत्वों से दूर रहें: रविशंकर

¥00·,,0`0·0£

आध्यात्मिक गुरु श्री श्री रवि शंकर ने बुधवार को कहा कि जेन-जी युवाओं को उनसे जुड़े मुद्दों पर अपनी राय जरूर रखनी चाहिए, लेकिन समाज और राष्ट्र विरोधी तत्वों से दूर रहना चाहिए। गुजरात के आनंद जिले में वसद आश्रम के दौरे के दौरान उन्होंने कहा कि युवाओं को धैर्य और संयम रखना चाहिए। गैर-जिम्मेदार लोगों को अपनी सोच पर हावी होने देने के बजाय उन्हें सही सलाह देनी चाहिए और अलग-अलग दृष्टिकोण समझने के लिए प्रेरित करना चाहिए।



आंदोलनों के संदर्भ में उन्होंने कहा कि युवाओं को अपनी समस्याओं के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए, लेकिन ऐसे प्रदर्शनों में शामिल राष्ट्र-विरोधी तत्वों से दूरी बनाए रखनी चाहिए। रवि शंकर ने युवाओं में बढ़ती आक्रामकता और अवसाद पर भी चिंता जताई। उन्होंने कहा कि युवा छोटी-छोटी बातों पर आक्रामक हो जाते हैं या अवसाद में चले जाते हैं। यह भारत ही नहीं, पूरी दुनिया के लिए बड़ी चुनौती है। उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य बेहतर रखने के लिए ध्यान, योग, निस्वार्थ सेवा और आध्यात्मिकता अपनाने की सलाह दी।

हज यात्रियों की सुविधा और बेहतर व्यवस्थाओं के लिए भारत ने प्रतिबद्धता दोहराई

नई दिल्ली। हज पर जाने वाले भारतीयों के लिए बेहतर इंतजाम करने के उद्देश्य से भारत और सऊदी अरब ने हज-2027 को लेकर तैयारियां तेज कर दी हैं। इस सिलसिले में केंद्रीय मंत्री किरेन रिजीजू ने सऊदी अरब के जेद्दा में आयोजित हज सम्मेलन में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने हज यात्रियों की सुविधा और बेहतर व्यवस्थाओं के लिए भारत की मजबूत प्रतिबद्धता दोहराई। रीजीजू ने एक्स पर एक पोस्ट साझा की, जिसमें उन्होंने भारत और सऊदी अरब के बीच मजबूत साझेदारी पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि दोनों देश हज यात्रियों के कल्याण और हज-2027 के सफल आयोजन के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने साफ किया कि दोनों देशों की साझेदारी से हज यात्रियों को सर्वोत्तम सुविधाएं देने में मदद मिलेगी।

सैमसंग इंडिया ने इलेक्ट्रॉनिक्स मरम्मत में प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए MSME मंत्रालय के साथ समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए

नईदल्ली। सैमसंग इंडिया और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय (MSME) ने तीन साल के एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए हैं। इसके तहत पहले साल में 1,600 लोगों को इलेक्ट्रॉनिक्स रिपेयर, मेंटेनेंस और सर्विसिंग का प्रशिक्षण दिया जाएगा। यह प्रशिक्षण पूरे देश में स्थित 15 MSME टेक्नोलॉजी सेंटरों के माध्यम से दिया जाएगा। यह समझौता ज्ञापन नई दिल्ली के कर्तव्य भवन में MSME के विकास आयुक्त (Development Commissioner) कार्यालय में हस्ताक्षरित किया गया। इस दौरान MSME के अतिरिक्त सचिव और विकास आयुक्त डॉ. रजनीश; सैमसंग SW के CSR और कॉर्पोरेट कम्युनिकेशंस प्रमुख शुभम मुखर्जी; सैमसंग SWA के एक्सटर्नल



कम्युनिकेशंस और CSR विभाग के जुनहो जियोंग; सैमसंग SWA के कस्टमर सर्विस (फील्ड क्वालिटी मैनेजमेंट) विभाग के ह्युन्की मिन; और सैमसंग तथा मंत्रालय के अन्य अधिकारी मौजूद थे। सैमसंग की 'दोस्त सर्विस' (Dost Service) पहल के तहत, कंपनी भाग लेने वाले केंद्रों में क्लासरूम और प्रयोगशालाओं (लैब) के लिए सहयोग देगी, साथ ही प्रैक्टिकल ट्रेनिंग के लिए जरूरी उत्पाद और उपकरण उपलब्ध कराएगी। यह प्रशिक्षण मोबाइल फोन, टैबलेट, स्मार्टवॉच, टेलीविजन, एयर कंडीशनर, वाशिंग मशीन और प्रोफेशनल डिस्प्ले उत्पादों के लिए दिया जाएगा। सैमसंग साउथ वेस्ट एशिया के CSR और कॉर्पोरेट कम्युनिकेशंस प्रमुख शुभम मुखर्जी ने कहा, भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स इकोसिस्टम में मैन्युफैक्चरिंग क्षमता के विकास के साथ-साथ कुशल सर्विस तकनीशियनों की भी जरूरत है। जैसे-जैसे उत्पाद अधिक आधुनिक होते जा रहे हैं, तकनीशियनों को उनकी इंस्टॉलेशन, मेंटेनेंस और रिपेयरिंग के लिए व्यावहारिक और समय-समय पर अपडेट होने वाले कौशल की आवश्यकता होती है। उद्योग जगत, व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थानों को प्रासंगिक पाठ्यक्रम, उपकरण और कार्यस्थल के अनुभव (workplace e&posure) के जरिए मदद कर सकता है। इस साझेदारी के माध्यम से, हम प्रशिक्षण को सर्विस की जरूरतों से जोड़ रहे हैं और अधिक लोगों को इस क्षेत्र में अपना करियर बनाने में मदद कर रहे हैं। कौशल प्रशिक्षण (Skills Training) सैमसंग इंडिया की CSR पहल 'सैमसंग दोस्त सर्विस' (Samsung DOST Service) की शुरुआत 2014 में हुई थी।

इसके तहत सरकारी MSME टेक्नोलॉजी सेंटरों और औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (ITI) के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक्स रिपेयर, मेंटेनेंस और इंस्टॉलेशन का व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है।

विश्व डायबिटीज दिवस: समय रहते कदम उठाने की शुरुआत खानपान से, रोजाना के आहार में कैलिफोर्निया बादाम जैसे नट्स को करें शामिल

नईदिल्ली। डायबिटीज से पीड़ित लगभग हर दो में से एक व्यक्ति को अपनी स्थिति के बारे में जानकारी नहीं है और उनका निदान नहीं हो पाता है। ऐसे में 14 नवंबर को मनाया जाने वाला विश्व डायबिटीज दिवस एक बार फिर समय रहते कदम उठाने के महत्व पर ध्यान केंद्रित करता है। इस वर्ष की थीम, डायबिटीज पर समय रहते कदम उठाना, डायबिटीज की जल्द पहचान करने और इसके जोखिम को कम करने पर जोर देती है। भारत को अक्सर दुनिया की डायबिटीज राजधानी कहा जाता है। ऐसे में समय रहते कदम उठाने की यह अपील देश के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। द लैंसेट डायबिटीज एंड एंडोक्राइनोलॉजी में 2023 में प्रकाशित इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (ICMR)–INDIAB के अध्ययन के अनुसार, भारत में अनुमानित 10.1 करोड़ लोग डायबिटीज से पीड़ित हैं, जबकि 13.6 करोड़ लोग प्री-डायबिटीज की स्थिति में हैं। इसका मतलब है कि देश की आबादी का एक बड़ा हिस्सा ऐसी स्थिति में है, जहां समय रहते कदम उठाना बेहद जरूरी है। प्रोसेस्ड फूड, रिफाइंड कार्बोहाइड्रेट और चीनी से भरपूर खानपान इस चुनौती को और बढ़ाता है। इसीलिए, रोजमर्रा के खानपान से जुड़े विकल्प इस दिशा में शुरुआत करने का एक व्यावहारिक तरीका हैं और कैलिफोर्निया बादाम जैसे नट्स को भी इस दिनचर्या का हिस्सा बनाया जा सकता है। बादाम का अनूठा पोषक तत्व प्रोफाइल, जिसमें प्रोटीन [6 ग्राम] और फाइबर [3 ग्राम] शामिल हैं, उन्हें ब्लड शुगर को नियंत्रित रखने में मदद करने वाले एक प्राकृतिक खाद्य विकल्प के रूप में उपयुक्त बनाता है। रितिका समद्दार, रीजनल हेड - डाइटेटिक्स, मैक्स हेल्थकेयर, दिल्ली ने कहा, समय रहते कदम उठाने का मतलब अक्सर छोटी-छोटी चीजों को नियमित रूप से अपनाना होता है और इसकी शुरुआत अपनी थाली से की जा सकती है। दालों, साबुत अनाज और हरी पत्तेदार सब्जियों से भरपूर भोजन एक अच्छा आधार तैयार करता है, वहीं बादाम आपके रोजमर्रा के आहार में अधिक पोषक तत्व शामिल करने का एक आसान तरीका हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसे एक बार के प्रयास के बजाय अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाया जाए और संतुलित आहार तथा स्वस्थ जीवनशैली के रूप में अपनाया जाए। यह भारतीय आहार संबंधी दिशानिर्देशों के अनुरूप है,

धनंजय डी सिल्वा और कुसल मेंडिस के शतकों से श्रीलंका मजबूत

पाकिस्तान से सिर्फ 30 रन पीछे

रावलपिंडी। रावलपिंडी टेस्ट के तीसरे दिन धनंजय डी सिल्वा और कुसल मेंडिस ने शानदार शतक जड़े। श्रीलंका ने 404/4 रन बना लिए हैं और टीम पाकिस्तान के पहली पारी के स्कोर से सिर्फ 30 रन पीछे है। पाकिस्तान और श्रीलंका के बीच दो मैचों की टेस्ट सीरीज का पहला मुकाबला रावलपिंडी के रावलपिंडी क्रिकेट स्टेडियम में खेला जा रहा है। बुधवार को रावलपिंडी क्रिकेट स्टेडियम में खराब रोशनी के कारण तीसरे दिन का खेल समय से पहले समाप्त करना पड़ा। दिन का खेल खत्म होने तक श्रीलंका ने 102 ओवर में 4 विकेट के नुकसान पर 404 रन बना लिए थे। श्रीलंका की टीम पाकिस्तान के पहली पारी के स्कोर से सिर्फ 30 रन पीछे थी। धनंजय डी सिल्वा 167 रन और कप्तान कुसल मेंडिस 117 रन बनाकर नाबाद थे। दोनों बल्लेबाज चौथे दिन अपनी पारी आगे बढ़ाएंगे। पाकिस्तान ने 9 विकेट पर 434 रन बनाकर पहली पारी घोषित कर दी थी। इंग्लैंड को लगा तगड़ा झटका, जैकब बेथेल घुटने की चोट के कारण ऑस्ट्रेलिया दौरे से बाहर इसके बाद धनंजय डी



सिल्वा का साथ देने के लिए कप्तान कुसल मेंडिल आए। दोनों बल्लेबाजों ने पाकिस्तान के गेंदबाजों को खासा परेशान किया और 5वें विकेट के लिए अपनी साझेदारी को 249 रन तक पहुंचाया। धनंजय और कुसल ने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 102वें ओवर में श्रीलंका को 404 रन के पार पहुंचा दिया। अब मेहमान टीम पाकिस्तान के पहली पारी के 434 रन के स्कोर के करीब पहुंच गई है। खराब रोशनी के कारण तीसरे दिन का खेल समाप्त करने तक धनंजय डी सिल्वा जहां 167 रन बनाकर नाबाद हैं, वहीं श्रीलंकाई कप्तान ने अपने टेस्ट करियर का 11वां शतक पूरा किया। कुसल मेंडिस 117 रन बनाकर क्रीज पर डटे हुए हैं।

कुसल मेंडिस और धनंजय डी सिल्वा की शानदार बल्लेबाजी

श्रीलंका की टीम चौथे दिन, कल (मंगलवार) के स्कोर 114/3 से आगे खेलने के लिए मैदान उतरी। कामिंदु मेंडिस और धनंजय डी सिल्वा ने बल्लेबाजी करते हुए चौथे विकेट के लिए 151 गेंद में 90 रनों की साझेदारी की। कामिंदु मेंडिस कल के स्कोर में 18 रन और जोड़कर आउट हो गए। कामिंदु मेंडिस ने 131 गेंद में 58 रन की पारी खेली। कामिंदु मेंडिस के टेस्ट करियर का यह 7वां अर्धशतक है।

श्रीलंका की शुरुआत रही थी खराब

बता दें कि श्रीलंका ने दूसरे दिन अपनी पहली पारी आगे बढ़ाते हुए बेहद खराब शुरुआत की थी। टीम ने सिर्फ 12 रन के भीतर अपने दो विकेट गंवा दिए थे। श्रीलंका के ओपनर पसिंदु सूरियाबंदर बिना खाता खोले आउट हो गए थे, वहीं दिनेश चांडीमल को एक रन पर आउट हो गए थे। इसके बाद लाहिरू उदारा और कामिंदु मेंडिस ने 53 रनों की साझेदारी कर पारी को संभालने की कोशिश की। हालांकि ओपनर लाहिरू उदारा को 42 रन पर आउट हो गए थे। इस तरह 16.5 ओवर के बाद श्रीलंका का स्कोर 65/3 हो गया था। इसके बाद श्रीलंका ने शानदार वापसी की और डी सिल्वा तथा कुसल मेंडिस की बेहतरीन पारियों की बदौलत मैच में अपनी स्थिति मजबूत कर ली।

भारत के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए न्यूजीलैंड टीम घोषित

चोट से उबरकर रचिन रवींद्र की वापसी; टॉम लैथम संभालेंगे कप्तानी



वैलिंगटन। भारत के खिलाफ 19 नवंबर से शुरू होने वाली दो मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए न्यूजीलैंड ने 14 सदस्यीय टीम घोषित की है। रचिन रवींद्र की टीम में वापसी हुई है, जबकि केन विलियमसन की गैरमौजूदगी में टॉम लाथम कप्तानी करेंगे। चोट से उबर रहे रचिन, कॉन्वे और ब्लंडेल न्यूजीलैंड क्रिकेट के मुताबिक, रचिन रवींद्र, डेवोन कॉन्वे और टॉम ब्लंडेल पहले टेस्ट के लिए उपलब्ध होने की कोशिश कर रहे हैं। रचिन सितंबर में प्रमोशनल शूट के दौरान दायां कंधा खिसकने के कारण भारत के खिलाफ टी-20 और वनडे सीरीज नहीं खेल सके। वहीं, कॉनवे कनकशन और ब्लंडेल क्वाड्रिसेप्स की चोट से उबर रहे हैं। ब्लंडेल के पास 50वां टेस्ट खेलने का मौका टॉम ब्लंडेल अगर भारत के खिलाफ दोनों टेस्ट मैच खेलते हैं तो वे न्यूजीलैंड के लिए 50 टेस्ट खेलने वाले विकेटकीपर बल्लेबाज बन जाएंगे। हालांकि, उनका पहले टेस्ट में खेलना फिटनेस पर निर्भर करेगा।

इंग्लैंड दौरे वाली टीम में एक बदलाव

न्यूजीलैंड की टीम काफी हद तक जून में इंग्लैंड को उसी के घर में 2-1 से हराने वाली टीम जैसी है। केन विलियमसन और तेज गेंदबाज विल ओ'रूर्के, बेन सीयर्स और जैक फाउल्क्स इस टीम का हिस्सा नहीं हैं। विल ओ'रूर्के का वर्कलोड मैनेज किया जा रहा है, जबकि सीयर्स टखने और फाउल्क्स हिप की चोट से उबर रहे हैं। तेज गेंदबाज जैकब डफी टीम में नया नाम हैं। वे पितृत्व अवकाश के कारण इंग्लैंड दौरे पर नहीं गए थे। बीजे वाटलिंग बने न्यूजीलैंड के नए बैटिंग कोच न्यूजीलैंड के पूर्व विकेटकीपर बल्लेबाज बीजे वाटलिंग टीम के नए बैटिंग कोच होंगे। वे ल्यूक रोंची की जगह लेंगे। वाटलिंग पहले टेस्ट से तीन दिन पहले सोमवार को टीम से जुड़ेंगे। डब्ल्यूटीसी फाइनल की रेस के लिए अहम सीरीज भारत और न्यूजीलैंड के बीच यह सीरीज वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप 2025-27 के लिहाज से अहम है। न्यूजीलैंड फिलहाल पॉइंट्स टेबल में पहले स्थान पर है, जबकि साउथ अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया भी उसके करीब हैं। भारत चौथे स्थान पर है। उसे जून 2027 में होने वाले फाइनल की दौड़ में बने रहने के लिए अपने बाकी सात टेस्ट में से ज्यादातर जीतने होंगे।

मास्टर्स जापान: लक्ष्य का शानदार प्रदर्शन

पुरुष एकल के दूसरे दौर में पहुंचे



नईदिल्ली। भारत के स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी लक्ष्य सेन ने शानदार प्रदर्शन किया। लक्ष्य ने चीनी ताइपे के ची यू जेन को सीधे गेम में हराया और दूसरे दौर में प्रवेश कर लिया। भारत के स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी लक्ष्य सेन ने बुधवार को चीनी ताइपे के ची यू जेन को सीधे गेम में हराकर शानदार प्रदर्शन करते हुए कुमामोतो मास्टर्स जापान सुपर 500 बैडमिंटन टूर्नामेंट के पुरुष एकल के दूसरे दौर में प्रवेश कर लिया। आठवीं वरीयता प्राप्त भारतीय खिलाड़ी ने यह मुकाबला 21-19, 21-18 से अपने नाम किया। जर्मनी में हायलो ओपन का खिताब जीतने के बाद लक्ष्य का आत्मविश्वास काफी बढ़ा हुआ है। युगल मुकाबलों में मिली

चीनी ताइपे के खिलाड़ी को हराया

निराशा हालांकि युगल मुकाबलों में भारत को निराशा का सामना करना पड़ा। भारत के ध्रुव रावत और के. मनीषा को चीनी ताइपे की चौथी वरीयता प्राप्त जोड़ी ये होंग वेई और निकोल गोंजालेस चान के खिलाफ 21-16, 14-21, 14-21 से हार का सामना करना पड़ा। वहीं, हरिहरन अमसाकरुणन और तनीषा क्रास्टो की जोड़ी चीन की शीर्ष वरीयता प्राप्त जोड़ी जियांग झेन बांग और वेई या शिन से 7-21, 9-21 से हार गई। 2021 विश्व चैंपियनशिप के कांस्य पदक विजेता लक्ष्य सेन को पिछले साल मलयेशिया ओपन में ची यू जेन के खिलाफ हार मिली थी।

विश्व चैंपियनशिप: निशानेबाज नीरज कुमार ने हासिल किया ओलंपिक कोटा

50 मीटर राइफल थ्री पोजीशन में जीता कांस्य



नईदिल्ली। भारतीय निशानेबाज नीरज कुमार ने बुधवार को आईएसएसएफ विश्व चैंपियनशिप में पुरुषों की 50 मीटर राइफल थ्री पोजीशन स्पर्धा में कांस्य पदक जीतकर 2028 लॉस एंजिलिस ओलंपिक का कोटा हासिल कर लिया। इस चैंपियनशिप में भारत का यह दूसरा ओलंपिक कोटा है। इससे पहले जयपाल मालवीय ने पुरुषों की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में रजत पदक जीतकर देश के लिए पहला कोटा हासिल किया था।

रजत की दौड़ में बने हुए थे नीरज

नीरज ने फाइनल में कुल 346.5 अंक हासिल किए। वह रजत पदक की दौड़ में भी बने हुए थे लेकिन अंतिम दौर में 9.4 अंक का निशाना लगाने के कारण उन्हें तीसरे स्थान से संतोष करना पड़ा। व्यक्तिगत तटस्थ खिलाड़ी (एआईएन) के रूप में हिस्सा ले रहे दिमित्री पिमेनोव ने 362.8 अंक के विश्व जूनियर रिकॉर्ड स्कोर के साथ स्वर्ण पदक अपने नाम किया जबकि स्लोवाकिया के पैट्रिक जानी ने रजत पदक जीता। पिमेनोव और जानी ने भी लॉस एंजिलिस ओलंपिक के कोटा हासिल किए। फाइनल में पहुंचे भारत के एक अन्य निशानेबाज ऐश्वर्य प्रताप सिंह तोमर 323.7 अंक के साथ पांचवें स्थान पर रहे।

अबुधाबी टी10 लीग : हेटमायर की आक्रामक पारी से एमिरेट्स ईगल्स ने यूएई बुल्स को 25 रनों से हराया



अबुधाबी। शिमरन हेटमायर की आक्रामक पारी से यहां जारी अबुधाबी टी10 लीग में एमिरेट्स ईगल्स ने यूएई बुल्स को 25 रनों से हरा दिया। इस मैच में एमिरेट्स ईगल्स की ओर से हेटमायर ने यूएई बुल्स के खिलाफ मैच में केवल 28 गेंदों में ही 76 रन बना दिये। अपनी इस पारी में हेटमायर ने 6 छक्के और 7 चौके लगाये। उनकी इस आक्रामक पारी से एमिरेट्स ईगल्स की टीम ने यूएई बुल्स को आसानी से हरा दिया। इस मुकाबले में हालांकि पहले बल्लेबाजी करते हुए एमिरेट्स ईगल्स की शुरुआत खराब रही। टीम ने सिर्फ 7 रनों पर ही अपने दो विकेट खो दिये। इसके बाद शिमरन हेटमायर ने कप्तान रोवमैन पॉवेल के साथ मिलकर पारी संभाली। हेटमायर के अलावा, पॉवेल ने भी 215 के स्ट्राइक रेट से केवल 20 गेंदों में 43 रन बनाये। हेटमायर और पॉवेल की इस आक्रामक बल्लेबाजी से एमिरेट्स ईगल्स की टीम ने 10 ओवर में 7 विकेट पर 137 रन बनाये।

अंडर-19 एशिया कप में आज होंगे सेमीफाइनल मुकाबले

मस्कत। ओमान में जारी अंडर-19 एशिया कप के सेमीफाइनल मुकाबले गुरुवार को शुरु हो रहे हैं। इससे पहले सेमीफाइनल मुकाबले गुरुवार, 12 नवंबर को खेले जाएंगे। भारत और पाकिस्तान की अंडर-19 टीमें पहले ही सेमीफाइनल में पहुंच गयी हैं। ऐसे में इस बार भी इन दोनो के बीच , 14 नवंबर को खिताबी मुकाबला होने की संभावना है। भारत, पाकिस्तान के अलावा दो अन्य टीमें अफगानिस्तान और बांग्लादेश भी सेमीफाइनल में पहुंची है। इसमें ग्रुप ए में पाकिस्तान ने अपने सभी तीनों मुकाबले जीतकर नंबर एक स्थान हासिल किया है। वहीं इसी ग्रुप में भारतीय टीम ने पाकिस्तान के खिलाफ हार के बाद बचे हुए दोनों मैच जीतकर शानदार वापसी की और अंक तालिका में दूसरे स्थान पर रहते हुए अंतिम चार में प्रवेश किया। वहीं दूसरी ओर ग्रुप बी में अफगानिस्तान की टीम अपने तीनों मैच जीतकर शीर्ष पर है। वहीं बांग्लादेश की टीम तीन में से दो मुकाबले जीतकर दूसरे स्थान पर है। इससे लंका और मलेशिया की टीमें रेस से बाहर हो गईं।

नोस्कोवा डब्ल्यूटीए फाइनल्स में गॉफ को हराकर सेमीफाइनल में पहुंची



इंडियन वेल्स। चेक गणराज्य की लिंडा नोस्कोवा ने यहां जारी डब्ल्यूटीए महिला टेनिस फाइनल्स के एक मुकाबले में अमेरिका की कोको गॉफ को हराकर सेमीफाइनल में जगह बनायी है। नोस्कोवा ने गॉफ को सीधे सेटों में 6-3, 6-3 से हराकर अंतिम चार में प्रवेश किया। यह मुकाबला केवल 75 मिनट तक चला और इसमें नोस्कोवा ने अपने अच्छे खेल से सभी को प्रभावित किया। उनकी इस शानदार जीत ने न केवल उन्हें टूर्नामेंट के अंतिम चार में पहुंचाया है, बल्कि कई महत्वपूर्ण रिकॉर्ड भी उनके नाम किए हैं। नोस्कोवा की यह उपलब्धि कई मायनों में ऐतिहासिक है। वह 2011 में दिग्गज पेट्रा क्वितोवा के बाद अपने पहले डब्ल्यूटीए फाइनल्स में सेमीफाइनल में पहुंचने वाली सबसे कम उम्र की खिलाड़ी बन गई हैं। इसके अलावा, डब्ल्यूटीए के आंकड़ों के अनुसार, वह 2024 में गॉफ के बाद अपने पहले दो राउंड-रॉबिन मैच जीतने वाली सबसे कम उम्र की खिलाड़ी भी हैं और 2021 में एनेट कोंटावेइट के बाद ऐसा करने वाली पहली नंबर 8 सीड हैं।

सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में केरल की कप्तानी करेंगे सैमसन



तिरुवनंतपुरम। विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन अब सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में केरल की कप्तानी करते दिखेंगे। केरल क्रिकेट एसोसिएशन ने आगामी सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी 2026 के लिए सैमसन को टीम का कप्तान बनाया है। मुश्ताक अली ट्रॉफी 24 नवंबर से होने जा रही है। टीम के चयनकर्ताओं ने 18 सदस्यीय मजबूत और संतुलित दल घोषित किया है।

सैमसन केरल की टीम में लंबे समय के बाद वापसी कर रहे हैं। उन्होंने इस साल की शुरुआत में पुडुचेरी के खिलाफ विजय हजारे ट्रॉफी में खेला था, जो केरल के लिए उनका अंतिम मैच था। इसके बाद से वह पूरी तरह से भारतीय राष्ट्रीय टीम से ही खेलते रहे। राष्ट्रीय स्तर पर लगातार अच्छे प्रदर्शन करने के बाद अब संजू घरेलू मंच पर अपनी घरेलू टीम का नेतृत्व करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में केरल अपना पहला मुकाबला 24 नवंबर को मध्य प्रदेश के खिलाफ खेलेगी। ये मैच मोहाली के पास तीरा स्थित पीसीए स्टेडियम में खेला जाएगा। केरल को इस टूर्नामेंट में ग्रुप सी में रखा गया है। इस ग्रुप में केरल के अलावा मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, असम, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, पुडुचेरी और त्रिपुरा जैसी मजबूत टीमें शामिल हैं, जिससे मुकाबले काफी रोमांचक होने की उम्मीद है।

पिछली बार भी सैमसन ने ही केरल की कप्तानी संभाली थी। उस संस्करण में उन्होंने 6 पारियों में कुल 233 रन बनाए थे, और रोहन कुन्नुमल के बाद केरल के सबसे ज्यादा रन बनाने वाले दूसरे बल्लेबाज रहे थे।



बसरा में अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण ईरानी फुटबॉल टीम को एक दूसरी जगह होटल लेना पड़ा। इसी होटल में एकसाथ नजर आ रहे ईरानी खिलाड़ी।

तीनों फॉर्मेट के लिए चुनी गईं टीमें

इंग्लैंड ए के खिलाफ इंडिया ए महिला टीम का ऐलान

मुंबई। इंग्लैंड-ए के खिलाफ आगामी ऑल-फॉर्मेट सीरीज के लिए इंडिया-ए टीमों की घोषणा कर दी गई है। इस सीरीज में तीन टी20, तीन वनडे और एक मल्टी-डे मुकाबला खेला जाएगा। टी20 सीरीज के मुकाबले पुणे के महाराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में खेले जाएंगे, जबकि वनडे और मल्टी-डे मुकाबले मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में आयोजित होंगे। इंग्लैंड-ए के खिलाफ टी20 और वनडे सीरीज के लिए इंडिया-ए टीम की कप्तान अनुष्का शर्मा हैं, जबकि उप-कप्तान मिन्नू मणि को बनाया गया है। मल्टी-डे मुकाबले के लिए इंडिया ए टीम की कप्तानी



मिन्नू मणि को सौंपी गई है, जबकि तेजल हसबनीस उप-कप्तान की भूमिका में नजर आएंगी।

मल्टी-डे मुकाबले के लिए इंडिया ए टीम शुभा सतीश, प्रिया पुनिया, तनिषा सिंह, पूर्वजा वेलेंकर, हेनरिएटा परेरा, तेजल हसबनीस (उप-कप्तान), शिप्रा गिरि (विकेट-कीपर), उमा छेत्री (विकेट-कीपर), मिन्नू मणि (कप्तान), श्रेयंका पाटिल, साइमा ठाकोर, अक्षिता भगत, अमीषा बहुखंडी, हैप्पी कुमारी और शबनम शकील। इंग्लैंड ए महिला टीम का भारत दौरा 2026: पूरा शेड्यूल भारत दौरे पर इंग्लैंड-ए महिला क्रिकेट टीम इंडिया-ए से टी20 सीरीज का पहला मुकाबला 30 नवंबर, दूसरा 3 दिसंबर और तीसरा 5 दिसंबर को खेलेगी। इसके बाद दोनों टीमों के बीच वनडे सीरीज खेली जाएगी।

टी-20 सीरीज के लिए इंडिया-ए टीम

वृंदा दिनेश, तनिषा सिंह, सानिका चालके, अनुष्का शर्मा (कप्तान), निकी प्रसाद, जी कमलिनी (विकेट-कीपर), शिप्रा गिरि (विकेट-कीपर), मिन्नू मणि (उप-कप्तान), अमनजोत कौर, श्रेयंका पाटिल, वैष्णवी शर्मा, प्रेमा रावत, साइमा ठाकोर, मोनिका पटेल और काश्वी गौतम।

वनडे सीरीज के लिए इंडिया ए टीम

वृंदा दिनेश, तनिषा सिंह, प्रिया पुनिया, अनुष्का शर्मा (कप्तान), निकी प्रसाद, जी कमलिनी (विकेट-कीपर), शिप्रा गिरि (विकेट-कीपर), मिन्नू मणि (उप-कप्तान), तेजल हसबनीस, श्रेयंका पाटिल, अमीषा बहुखंडी, शबनम शकील, साइमा ठाकोर, अक्षिता भगत और काश्वी गौतम।

मातर हमारी संस्कृति और परंपरा का प्रतीक है : डॉ. रामेश्वरी बंजारे

डुंडेरा में यादव समाज ने धूमधाम से मनाया मातर महोत्सव, युवाओं ने दिखाए अखाड़े के हैरतअंगेज करतब





मूक पत्रिका

डुंडेरा। दीपावली पर्व के अवसर पर यादव समाज द्वारा डुंडेरा में मातर महोत्सव का आयोजन हर्षोल्लास एवं पारंपरिक उत्साह के साथ किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. रामेश्वरी बंजारे ने कहा कि मातर महोत्सव हमारी संस्कृति और परंपरा का प्रतीक है। यह दीपावली पर्व का अभिन्न अंग है, जो छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोक संस्कृति को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि मातर महोत्सव के माध्यम से समाज के लोगों को आपस में मिलने-जुलने और भाईचारे को मजबूत करने का अवसर मिलता है। ऐसे आयोजन हमारी सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने के साथ ही आने वाली पीढ़ियों को अपनी परंपराओं से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

यादव समाज के युवाओं ने किया अखाड़े का शानदार प्रदर्शन-महोत्सव में यादव समाज के युवाओं द्वारा पारंपरिक अखाड़े का आकर्षक प्रदर्शन किया गया। युवाओं ने अपने कौशल और शारीरिक दक्षता का प्रदर्शन कर उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। अखाड़े के प्रदर्शन को दर्शकों ने खूब सराहा।

समाज के सहयोग के लिए भेंट किया पंखा सेट-कार्यक्रम के दौरान प्रगतिशील छत्तीसगढ़ सतनामी समाज के जिला अध्यक्ष पवन बंजारे ने यादव समाज के अध्यक्ष मोहन यादव को समाज के उपयोग हेतु पंखा सेट भेंट किया। वहीं उपस्थित अतिथियों द्वारा भी समाज के सहयोग के लिए सहयोग राशि प्रदान की गई।

ये रहे प्रमुख अतिथि एवं उपस्थितजन-कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. रामेश्वरी बंजारे के साथ पार्वती कुर्रे, पार्षद विक्रम चंद्राकर, रोहित धनकर, चंद्रशेखर चंद्राकर, अशोक साहू, बी.आर. मौर्य, गोविंद साहू एवं पवन बंजारे सहित अन्य अतिथि उपस्थित रहे। इस अवसर पर यादव समाज के अध्यक्ष मोहन यादव, छन्नू लाल यादव, बिशहत यादव, नीलमणि यादव, गोपाल यादव, रोमशंकर यादव, गायत्री यादव, मीना यादव, तिलेश्वरी यादव, शत्रुहन यादव, भीषम यादव, भूषण यादव सहित बड़ी संख्या में समाज के लोग उपस्थित रहे।

धान खरीदी की तैयारियों का कलेक्टर सुश्री प्रतिष्ठा ममगाई ने लिया जायजा, डूंडा और देवरबीजा केंद्रों का किया निरीक्षण

15 नवंबर से शुरू होगी समर्थन मूल्य पर धान खरीदी, 10 नवंबर से किसानों के लिए टोकन जारी करने की प्रक्रिया प्रारंभ





मूक पत्रिका

बेमेतरा - खरीफ विपणन वर्ष 2026-27 के अंतर्गत जिले में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी की तैयारियां तेज हो गई हैं। इसी क्रम में कलेक्टर सुश्री प्रतिष्ठा ममगाई ने बीते गुरुवार को डूंडा एवं देवरबीजा धान खरीदी केंद्रों का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने केंद्रों में किसानों की सुविधा के लिए की जा रही तैयारियों की जानकारी ली तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। कलेक्टर ने निर्देशित किया कि धान खरीदी केंद्रों में किसानों के लिए पेयजल, छाया, बैठने की व्यवस्था सहित सभी आवश्यक सुविधाएं सुनिश्चित की जाएं। किसानों को टोकन प्राप्त करने से लेकर धान विक्रय तक किसी प्रकार की असुविधा न हो। साथ ही केंद्रों में व्यवस्थित तौल, धान की गुणवत्ता जांच एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं समय पर पूरी करने के निर्देश दिए, ताकि किसानों को अपनी उपज बेचने में आसानी हो।उल्लेखनीय है कि जिले में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी का शुभारंभ 15 नवंबर 2026 से होगा। किसानों की सुविधा एवं खरीदी प्रक्रिया को सुगम बनाने के उद्देश्य से 10 नवंबर से ही टोकन जारी करने की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है। कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि शासन के दिशा-निर्देशों के अनुरूप धान खरीदी कार्य पारदर्शी, सुचारू एवं किसान हितैषी तरीके से संपन्न कराया जाए।

जिला पंचायत सीईओ वासु जैन ने ठठारी धान खरीदी केंद्र का लिया जायजा औचक

15 नवंबर से शुरू होगी समर्थन मूल्य पर धान खरीदी, सभी आवश्यक तैयारियां समय-सीमा में पूर्ण करने का निर्देश



मूक पत्रिका

सक्ती/जैजैपुरः- जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी वासु जैन ने आज जिले के धान खरीदी केंद्र ठठारी का औचक निरीक्षण कर खरीदी की तैयारियों का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने शासन द्वारा निर्धारित चेकलिस्ट के अनुसार केंद्रों में आवश्यक व्यवस्थाओं का अवलोकन किया तथा संबंधित अधिकारियों एवं समिति प्रबंधकों को धान खरीदी प्रारंभ होने से पहले सभी तैयारियां पूर्ण करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक तौल मशीन, बारदाने, बायोमेट्रिक डिवाइस, कंप्यूटर, इंटरनेट, सीसीटीवी कैमरे, धान की गुणवत्ता जांच, पेयजल, शौचालय एवं किसानों के लिए अन्य आवश्यक सुविधाओं की जानकारी ली। उन्होंने सभी केंद्रों में आवश्यक कर्मचारियों एवं हमालों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए।वासु जैन ने कहा कि खरीफविपणन वर्ष 2026-27 में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी 15 नवंबर से प्रारंभ होगी। इसे ध्यान में रखते हुए सभी केंद्रों में आवश्यक व्यवस्थाएं समय-सीमा में पूर्ण करें, ताकि किसानों को धान विक्रय के दौरान किसी प्रकार की असुविधा न हो तथा खरीदी कार्य सुचारू, पारदर्शी एवं व्यवस्थित ढंग से संपन्न हो। निरीक्षण के दौरान संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

आंगनबाड़ी की खाद्य सामग्री ने खोली विभागीय व्यवस्था की पोल, शिकायत के बाद भी कार्रवाई का इंतजार; परियोजना अधिकारी और सुपरवाइजर की जवाबदेही पर सवाल

15 बच्चों के लिए महीनेभर का राशन! आखिर इतनी सामग्री में कैसे भरेगा बच्चों का पेट?







मूक पत्रिका

पवन कुमार नाग - करपावड सरकार एक ओर बच्चों के कुपोषण को दूर करने और उनके बेहतर स्वास्थ्य के लिए करोड़ों रुपये खर्च करने का दावा करती है, वहीं दूसरी ओर बकावंड क्षेत्र के आंगनबाड़ी केंद्रों में बच्चों को मिलने वाले पोषण आहार की व्यवस्था गंभीर सवालों के घेरे में है। 14 से 15 बच्चों के लिए पूरे एक महीने की खाद्य सामग्री के नाम पर जो राशन सामने आया है, उसे देखकर विभागीय व्यवस्था और निगरानी पर सवाल उठना लाजिमी है। तस्वीर में दाल, आलू, प्याज और मसालों सहित सीमित खाद्य सामग्री दिखाई दे रही है। सवाल यह है कि क्या इतनी सामग्री से 15 बच्चों को पूरे महीने पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जा सकता है? जब इस संबंध में आंगनबाड़ी केंद्र में जानकारी मांगी गई तो बताया गया कि सामने दिखाई दे रही खाद्य सामग्री से ही बच्चों को पूरे एक महीने तक भोजन कराना है। अब सवाल यह है कि आखिर विभाग ने किस आधार पर इतनी सामग्री निर्धारित की? क्या जिम्मेदार अधिकारियों ने कभी स्वयं राशन का वजन कराया है? क्या उन्हें यह जानकारी है कि बच्चों की संख्या के अनुपात में प्रतिदिन कितनी खाद्य सामग्री खर्च हो रही है?

बच्चों के पोषण की जिम्मेदारी या सिर्फ कागजों में खानापूर्ति?-आंगनबाड़ी केंद्रों का उद्देश्य केवल बच्चों का नाम दर्ज करना और सरकारी योजनाओं का संचालन दिखाना नहीं, बल्कि उन्हें नियमित और पर्याप्त पोषण आहार उपलब्ध कराना है। यदि 14 से 15 बच्चों के लिए यही सामग्री पूरे महीने की है, तो विभाग को सार्वजनिक रूप से बताना चाहिए कि निर्धारित

धान खरीदी कार्य से जुड़े निगरानी दल, उड़नदस्ता दल, जांच दल सहित विभिन्न दलों का प्रशिक्षण संपन्न



मूक पत्रिका

सक्ती:-जिले में समर्थन मूल्य पर होने वाली धान खरीदी को सुचारू, पारदर्शी एवं व्यवस्थित रूप से संपन्न कराने के उद्देश्य से 10 एवं 11 नवंबर 2026 को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में कलेक्टर जयश्री जैन की अध्यक्षता में दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। प्रशिक्षण में जिला स्तरीय निगरानी दल, विकासखंड स्तरीय उड़नदस्ता दल एवं तहसील स्तरीय जांच दल व डिस्ट्रिक्ट कमांड एंड कंट्रोल सेंटर (डीसीसीसी) के सदस्य व अन्य संबंधित अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे। प्रशिक्षण में जिला विपणन अधिकारी श्रीमती शोभना तिवारी एवं जिला खाद्य अधिकारी खुमेश्वर सिंह द्वारा धान खरीदी से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तार से जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में धान उपार्जन केंद्रों में मानक आकार के धान स्टैक का निर्माण, स्टैक की सही तरीके से गिनती, टोकन व्यवस्था, धान की आवक-जावक एवं खरीदी संबंधी निर्देश तथा बारदाना व्यवस्था के संबंध में जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में उपस्थित धान खरीदी कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों कर्मचारियों को धान खरीदी कार्य से जुड़े सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं की विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई तथा प्रशिक्षणार्थियों का शंका समाधान भी किया गया। साथ ही प्रत्येक धान उपार्जन केंद्र में पारदर्शिता एवं अनुशासन बनाए रखते हुए खरीदी प्रक्रिया को सुचारू रूप से संपन्न कराना सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। प्रशिक्षण के दौरान सभी दलों को निर्देशित किया गया कि धान खरीदी के दौरान किसानों को किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसका विशेष ध्यान रखा जाए। प्रशिक्षण में खाद्य विभाग, मार्कफेड, सहकारिता विभाग के अधिकारी, जिला स्तरीय निगरानी दल, विकासखंड स्तरीय उड़नदस्ता दल, तहसील स्तरीय जांच दल एवं डिस्ट्रिक्ट कमांड एंड कंट्रोल सेंटर के सदस्य व अन्य संबंधित अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

15 नवम्बर से 15 जनवरी तक तक समर्थन मूल्य पर होगी धान खरीदी

सक्ती जिले के 96 समितियों के अंतर्गत 129 उपार्जन केंद्रों में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी के लिए की जा रही तैयारियां



मूक पत्रिका

सक्ती:- खरीफ विपणन वर्ष 2026-27 अंतर्गत जिला सक्ती में 96 समितियों के अंतर्गत 129 उपार्जन केंद्रों में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी की तैयारी शासन के निर्देशानुसार की जा रही है। इस वर्ष धान कॉमन का समर्थन मूल्य 2441 रुपए प्रति क्विंटल एवं धान ग्रेड-ए का समर्थन मूल्य 2461 रुपए प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। समिति में टोकन के लिए लंबी कतारों से राहत एवं समय की बचत के लिए शासन द्वारा तुंहर टोकन मोबाइल ऐप की सुविधा उपलब्ध कराई गई है लघु एवं सीमांत किसान 2 एकड़ तक 1 टोकन, 2 से 10 एकड़ तक 2 टोकन तथा दीर्घ कृषक 10 एकड़ से ऊपर 3 टोकन के माध्यम से धान बिक्री कर सकेंगे। प्रति एकड़ धान खरीदी की अधिकतम सीमा 21 क्विंटल लिमिटिंग सहित निर्धारित की गई है। धान की खरीदी बायोमेट्रिक आधारित प्रणाली से की जाएगी। किसानों को टोकन संबंधी एवं धान बिक्री में किसी प्रकार की समस्या आती है, तो वे शासन द्वारा जारी राज्य स्तरीय हेल्पलाइन नंबर 1800-233-3663 के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। जिले के सभी पंजीकृत किसानों से अपील की गई है कि वे निर्धारित समय पर टोकन प्राप्त करें तथा निर्धारित तिथि एवं समय पर आवश्यक दस्तावेजों के साथ अपने संबंधित धान उपार्जन केंद्र में पहुंचकर धान विक्रय करें, ताकि धान खरीदी की प्रक्रिया सुचारू, पारदर्शी एवं समयबद्ध रूप से संपन्न हो सके।

सलवाही छात्रावास में बच्चों से कुएं से पानी भरवाने का मामला, अधीक्षक की बढ़ेगी परिवीक्षा अवधि

बलरामपुर,। रामचंद्रपुर विकासखंड के प्री-मैट्रिक बालक छात्रावास सलवाही में छात्रों से कुएं से ड्रम में पानी भरवाने का मामला सामने आने के बाद आदिवासी विकास विभाग ने छात्रावास अधीक्षक के विरुद्ध कार्रवाई की अनुशंसा की है। कलेक्टर के अनुमोदन के बाद सहायक आयुक्त, आदिवासी विकास ने अधीक्षक नारायण सिदार की परिवीक्षा अवधि एक वर्ष बढ़ाने के लिए आयुक्त, आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास को प्रस्ताव भेजा है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, 30 अक्टूबर को छात्रावास में बच्चों से कुएं से पानी भरवाए जाने की शिकायत मिली थी। शिकायत के बाद 3 नवंबर को प्रभारी मंडल संयोजक रामचंद्रपुर ने छात्रावास का निरीक्षण किया। इस दौरान अधीक्षक नारायण सिदार बिना किसी पूर्व सूचना के अनुपस्थित पाए गए।

कर्मचारी अधिकारी फेडरेशन के नेतृत्व में पूर्व मंत्री महेश गागड़ा को सौंपा ज्ञापन, सहायक शिक्षक के पद पर संविलियन की मांग

अनुदेशकों ने शिक्षा विभाग में संविलियन की उठाई मांग





मूक पत्रिका

बीजापुर/आशीष पदमवार। जिले में वर्षों से पोटाकेबिन और अन्य शैक्षणिक संस्थानों में सेवाएं दे रहे अनुदेशकों ने अब शिक्षा विभाग में संविलियन की मांग उठाई है। उनका कहना है कि करीब 17 वर्षों से शैक्षणिक कार्यों के साथ शासन-प्रशासन की विभिन्न जिम्मेदारियां निभाने के बावजूद उनके भविष्य को लेकर कोई स्पष्ट व्यवस्था नहीं है। इससे अनुदेशक और उनके परिवार असमंजस की स्थिति में हैं।कर्मचारी अधिकारी फेडरेशन जिला बीजापुर के बैनर तले जिला अध्यक्ष मोहम्मद जाकिर खान, जिला सचिव कैलाश रामटेके और अनुदेशक संघ के प्रदेश अध्यक्ष गोविंद गांधरला के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने पूर्व मंत्री महेश गागड़ा को मुख्यमंत्री एवं शिक्षा मंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में अनुदेशकों की दो सूत्रीय मांगों को शासन तक पहुंचाने का आग्रह किया गया है।अनुदेशक संघ के अनुसार प्रदेश में करीब 900 अनुदेशक पिछले 17 वर्षों से पोटाकेबिन और अन्य शैक्षणिक संस्थानों में सेवाएं दे रहे हैं। वे शैक्षणिक दायित्वों के अलावा शासन-प्रशासन की ओर से सौंपे गए विभिन्न कार्यों का भी निर्वहन कर रहे हैं। अनुदेशकों ने शिक्षा कर्मियों की तर्ज पर शिक्षा विभाग में सहायक शिक्षक के पद पर संविलियन की मांग रखी है। उनका कहना है कि अनुदेशक भी छत्तीसगढ़ शासन के शिक्षा विभाग से डीएलएड प्रशिक्षित हैं। ज्ञापन में मांगों पर गंभीरता से विचार कर आवश्यक कार्रवाई करने का अनुरोध किया गया है। इस पर पूर्व मंत्री महेश गागड़ा ने अनुदेशकों को यथासंभव सहयोग देने और उनकी मांगों से उच्च स्तर पर अवगत कराने का आश्वासन दिया। इस दौरान अनुदेशक संघ के जिला अध्यक्ष रितेश सेमल, उपाध्यक्ष सडवली जंगम, जिला सचिव पालदेव भूषणम, कार्यकारी अध्यक्ष गजेंद्र झाड़ी सहित रुकमणी झाड़ी, लीलावती झाड़ी, अशोक अवलम, श्यामबती मंडावी, कृष्णा मोरला, रामलाल नाग समेत बड़ी संख्या में अनुदेशक उपस्थित रहे।



स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक आशिष कुमार कंठले द्वारा कलयुग का भारत द्वारा अग्रदूत कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, भाजपा कार्यालय के पास, रायपुर, जिला-रायपुर (छ.ग.)-492001 से मुद्रित एवं वार्ड नंबर 18 बाजार पारा बेमेतरा पोस्ट व जिला बेमेतरा छ.ग. पिन कोड 491335 से प्रकाशित । संपादक आशिष कुमार कंठले समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार मो. नं. 7999238079, 7828658259, समस्त विवादों का निपटारा बेमेतरा न्यायालय होगा।